राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

# स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com ) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, शनिवार, 06 जून 2026

वर्ष 14, अंक 56, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

लखनऊ के 332 गांवों में कृषि जमीन के सर्किल रेट में बंपर बढ़ोतरी...03

कुत्तें के लिए दो देश आमने-सामनेः ब्राजील की थी करेंसी पर छापने की तैयारी मक्सिको ...02

## जुलाई में एक दिन में लगेंगे 35 करोड़ पौध विश्व पर्यावरण दिवस पर सीएम योगी के 5 संकल्प

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नागरिकों से प्रकृति व जलस्त्रोतों को नुकसान पहुंचाने वाले भूमाफिया, वन माफिया, खनन माफिया व स्मगलरों के प्रति सजग रहने की अपील की है. उन्होंने कहा कि सजग नागरिकों का दायित्व है कि मातृभूमि के प्रति दायित्वों का निर्वहन करें. सीएम ने विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रदेशवासियों को पांच संकल्प भी दिलाए. इसमें एक पेड़ मां के नाम लगाना, शरारती तत्वों व जीव-जंतुओं से पेड़ों की सुरक्षा, जल संरक्षण, सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग न करना और प्रकृति के अनुरूप जीवन शैली अपनाना शामिल है. सीएम ने कटाक्ष किया कोई टेंटी चोरी कर रहा है, कोई पानी बर्बाद कर रहा है, ऐसे लोगों को टोकें. जल संरक्षण को जीवन का हिस्सा बनाएं, कोशिश हो कि पानी व्यर्थ न हो. सीएम योगी ने शुक्रवार को इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में उत्तर प्रदेश में जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का समाधान संगोष्ठी का शुभारंभ किया. मुख्यमंत्री ने यहां प्रदर्शनी का अवलोकन किया, बच्चों को चॉकलेट दीं और आमजन को कपड़े के झोले देकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया. सीएम ने बच्चों के साथ सेल्फी ली और वृक्ष कलश में जल भी अर्पित किया.

**जल है तो कल है, वन है तो जीवन है**

अपने संबोधन में सीएम ने कहा कि जल है तो कल है, वन है तो जीवन है यानी जीवन चक्र एक-दूसरे के साथ जुड़ा है. फिर भी हमने इसकी सर्वाधिक उपेक्षा की. 40 से ऊपर हर व्यक्ति महसूस करता है कि पर्यावरण के साथ हुए खिलवाड़ की कीमत को दुनिया किस रूप में चुका रही है. 25 वर्ष पहले और वर्तमान मौसम चक्र में एक से डेढ़ महीने का अंतर आ गया. भारत व उत्तर प्रदेश में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था है. मौसम चक्र में अंतर से सर्वाधिक प्रभावित किसान होगा. उसकी आमदनी प्रभावित होगी, अतिवृष्टि-अनावृष्टि का सामना करना पड़ेगा. खाद्यान्न संकट खड़ा हो सकता है. असमय घटित होने वाली आपदाएं चेतावनी भी हैं.

**मां व मातृभूमि के प्रति कर्तव्यों का निर्वहन करें**

सीएम योगी ने कहा कि हमारे पूर्वजों व ऋषि परंपरा ने पर्यावरण के प्रति आगाह किया था. हम खुद को धरती मां का पुत्र कहते हैं. लंका पर विजय प्राप्त करने के बाद भगवान राम ने लक्ष्मण जी से कहा अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी. अर्थात लंका भले ही सोने की क्यों न हो, लेकिन मुझे यह अच्छी नहीं लगती. जिस मां ने जन्म दिया है, जहां हमने जन्म लिया है, उसके प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन और कृतज्ञता ज्ञापित करना हमारा दायित्व होना चाहिए. मां व मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है. भगवान राम की कही गई बातें आज भी हर भारतीय के लिए प्रासंगिक हैं.

**निरोग रहने तक ही भौतिक उपलब्धियां**

सीएम योगी ने कहा कि भौतिक उपलब्धियां क्षणिक हैं. इनकी उपलब्धि तभी तक है, जब तक आप निरोग होकर आरोग्यता के लक्ष्य को प्राप्त कर रहे हैं. पर्यावरण के समक्ष चुनौतियों का सामना करने के लिए भारत के ग्रंथों का अवलोकन करें. भारत की परंपरा में हर जीव-जंतु के प्रति हमारे संबंध जोड़े गए हैं. भगवान शंकर के गले में सर्प और सवारी नंदी है. कार्तिकेय की सवारी मोर, गणपति की मूषक और मां भगवती की सवारी शेर है. हर कालखंड में बैल की पूजा और गोमाता को मान्यता दी गई है. वे कृषि प्रधान व्यवस्था का आधार हैं. सर्प को किसान मित्र के रूप में मान्यता दी गई है. यह जीवन चक्र आपस में जुड़ा है.

**कुकरैल और लखनऊ के तापमान में मिलेगा अंतर**

सीएम ने कुकरैल वन क्षेत्र के शानदार प्राकृतिक वातावरण का जिक्र करते हुए कहा कि वहां और लखनऊ के तापमान में अंतर होता है. लखनऊ में 45 तो कुकरैल में तापमान 40 या उससे कम होगा. प्रकृति की गोद में जो भी आगे बढ़ेगा, वह आरोग्यता के लिए महत्वपूर्ण होगा. हमने कुकरैल से अवैध कब्जे हटाए. आज कुकरैल के किनारे लखनऊ का सबसे शानदार प्राकृतिक दृश्य सौमित्र वन भी दिख रहा है.

**प्रकृति सुरक्षित रहेगी, तभी मानवता सुरक्षित रहेगी**

सीएम ने विश्व पर्यावरण दिवस 2026 की थीम इंस्पायर्ड बाई नेचर फॉर क्लाईमेट फॉर अवर फ्यूचर का जिक्र किया और कहा कि स्वच्छ वायु, निर्मल जल, उपजाऊ भूमि व हरित वन मानव सभ्यता की जीवन रेखा हैं. जब प्रकृति सुरक्षित रहेगी, तभी मानवता सुरक्षित रह पाएगी. जल जीवन मिशन के तहत हर घर में जल व सबमर्सिबल की व्यवस्था हो गई है, लेकिन पहले कुआं खोदना पवित्र कार्य माना जाता था. दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ी के बराबर एक तालाब, दस तालाब के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है यानी वृक्ष का महत्व सर्वाधिक है.

**एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य का संदेश**

सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने तीन वर्ष पहले एक पेड़ मां के नाम अभियान का आह्वान किया था. उन्हीं की प्रेरणा से 9 वर्ष में प्रदेश में पौधरोपण के वृहद कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया. संकटों का सामना करने के लिए पीएम ने वसुधैव कुटुम्बकम के अनुरूप एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य का संदेश भी दुनिया को दिया है. उनके आहवान पर हम सब भारतवासी पौधरोपण महाभियान के तहत जननी व जन्मभूमि के प्रति पर्यावरण की चुनौतियों का सामना करते हुए प्रकृति के साथ खड़े हैं. सीएम ने कहा कि मार्च 2017 में पौधरोपण के लिए वन विभाग की नर्सरी में बमुश्किल 5 लाख पौधे मिल पाए थे, लेकिन आज सरकारी व निजी नर्सरी में 55 करोड़ पौधे तैयार हैं. आज प्रदेश भर में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पांच करोड़ पौधे लग रहे हैं. अब जुलाई में महाभियान चलाएंगे और एक दिन में नागरिकों के साथ मिलकर 35 करोड़ पौधे लगाएंगे.

**ग्लोबल वार्मिंग पर्यावरण के लिए चैलेंज**

सीएम ने ग्लोबल वार्मिंग, वायु प्रदूषण, बायो डायवर्सिटी के क्षरण व जल संकट को चैलेंज बताया. उन्होंने कहा कि इसके कारण पर्यावरण में ग्रीन हाउस गैस तथा ऐसे पार्टिकल आ रहे हैं तो लंग्स को प्रभावित कर रहे हैं. वातावरण में ऐसी चीजें घुल रही हैं, जो पर्यावरण के लिए नुकसानदायक हैं. इससे वर्षा का चक्र ही बदल गया है. कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ है.

**जल संसाधन की दृष्टि से यूपी समृद्धतम राज्यों में**

सीएम योगी ने कहा कि यूपी जल संसाधन की दृष्टि से समृद्धतम राज्यों में से एक है. हमारे पास अनेक साइट्स हैं, उन्हें चिह्नित करना होगा. अवैध कब्जों से मुक्त कराना होगा. 9 वर्ष पहले प्रदेश में केवल एक रामसर साइट थी, आज 13 हो गई हैं. इमरजेंसी के खिलाफ शंखनाद करने वाले महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जयप्रकाश की पावन जन्मभूमि बलिया के अंदर सुरहा ताल का 13वें रामसर साइट्स के रूप में चयन हुआ है. 2021 में पीएम मोदी ने गोरखपुर में फर्टिलाइजर प्लांट का शुभारंभ किया. यदि इसका संरक्षण करेंगे तो अच्छा जल मिल सकता है. पूरे चिलुआताल को संरक्षित कराया गया. वर्तमान में फर्टिलाइजर कारखाना, टाउनशिप, कैंपस के सैनिक स्कूल, एसएसबी मुख्यालय में उसी ताल से जलापूर्ति हो रही है. तीन दिन पहले मैं शाम पांच बजे ताल पर गया था. उस दिन गोरखपुर का तापमान 45 डिग्री था, लेकिन वहां का तापमान 35 डिग्री से कम लग रहा था.

**रामगढ़ताल व चिलुआताल को किया संरक्षित**

सीएम ने तालों के संरक्षण पर जोर देते हुए कहा कि हमने गोरखपुर में 1400 एकड़ में फैले रामगढ़ताल व 400-500 एकड़ में फैले चिलुआताल को संरक्षित किया है. ये नेचुरल वाटर बॉडी हैं. सीएम ने उन ग्राम प्रधानों की भी सराहना की, जिन्होंने ग्राम पंचायत में वेटलैंड या रामसर साइट्स के रूप में इसे आगे बढ़ाने में योगदान दिया है या उनके चिह्नीकरण व नोटिफिकेशन से जुड़े हैं. सीएम ने श्रावस्ती की ऐतिहासिक व पौराणिकता पर बल दिया और बताया कि पहले इसकी उपेक्षा होती थी, लेकिन आज वहां केन नाला को बायोडायवर्सिटी हेरिटेज साइट के रूप में अधिसूचित किया गया है.

## नेहरू बनाम मोदीः कभी देश ने देखा चीता के विलुप्त होने का दौर, अब इंटरनेशनल ट्रांसलोकेशन और बढ़ता परिवार

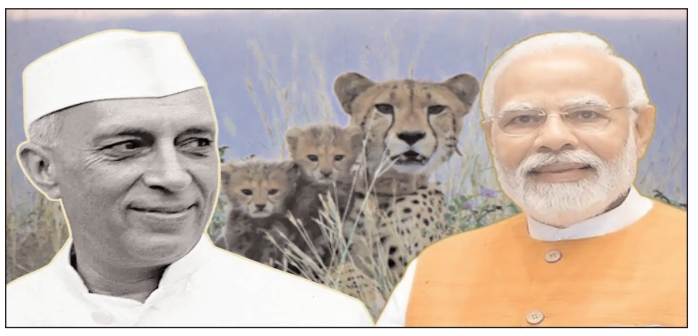

देश में चीते की गाथाएं पुरानी कहानियों में बुनी हुई हैं. एशियाई चीते जो कभी अरब प्रायद्वीप से भारतीय उपमहाद्वीप तक बिना किसी डर के विचरण करते थे, वो आजाद भारत से विलुप्त से हो गए. इससे घास के मैदान-सवाना बायोम में सूनापन हो गया. पहले एशियाई चीते पूरे भारत में उत्तर में पंजाब से लेकर तमिलनाडु में तिरुनेलवेली तक और पश्चिम में गुजरात और राजस्थान से लेकर पूर्व में बंगाल तक अलग-अलग खुली जगहों पर देखे जाते थे. इसमें झाड़ीदार जंगल, सूखे घास के मैदान, सवाना और दूसरे शुष्क से लेकर अर्ध शुष्क क्षेत्र शामिल थे. देश में जंगली चीतों को आखिरी बार 1947 में देखा गया था, जब आज के छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले के साल जंगलों में तीन जानवरों को गोली मार दी गई थी. पांच साल बाद 1952 में इस प्रजाति को भारत में आधिकारिक तौर पर विलुप्त घोषित कर दिया गया. भारत का मूल एशियाई चीता बहुत अधिक आखेट, अवैध शिकार और कोर्सिंग के लिए चीतों के इस्तेमाल होने की वजह से विलुप्त हो गया.

**कुनो बना चीता का नया आशियाना**

खेती की वजह से रहने की जगह का भारी स्तर पर नुकसान, शिकार में कमी, मौसम का दबाव और इस प्रजाति की कम पुनर्जनन दर और निम्न आनुवंशिक आधार ने उनके विलुप्त होने की गति को और तेज कर दिया. एक एक्सपर्ट कमेटी के समर्थन के बाद 24 गांवों (1,545 परिवारों) को दूसरी जगह बसाने के बाद कुनो को सबसे अच्छी रीइंट्रोडक्शन साइट के तौर पर चुना गया. इससे चीतों के लिए लगभग 6,258 हेक्टेयर घास के मैदान सृजित किए गए. 2022 तक स्पीशीज़ रिकवरी के लिए कन्वेंशन ऑन बायोलॉजिकल डायवर्सिटी (सीबीडी) से जुड़ी कार्यनीतियों से प्रोत्साहित होकर भारत ने इस योजना को कार्रवाई में बदल दिया. इस परियोजना का उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य 15 (जमीन पर जीवन) के अनुरूप है, जो भारत को अंतर सीमा संरक्षण के ज़रिए जैव विविधता के नुकसान को ठीक करने में अग्रणी देश बनाता है. 2022 में सितंबर की एक सुबह नामीबिया के सवाना से आठ शानदार चीतों ने भारतीय जमीं पर पैर रखे. यह एक ऐसी प्रजाति के पहले कदम थे जो लंबे समय से उपमहाद्वीप से गायब थी. मध्य प्रदेश के कुनो नेशनल पार्क में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुए इस ऐतिहासिक क्षण ने प्रोजेक्ट चीता की शुरुआत की, जो विश्व का पहला बड़े मांसाहारी पशु का अंतर-महाद्वीपीय स्थानांतरण था.

**नवंबर 2025 और मुखी का कुनबा**

नवंबर 2025 तक आते-आते भारत में पैदा हुई पहली चीता मुखी, खुद पांच स्वस्थ बच्चों की मां बन गई है. यह न केवल जैवकीय पुनरुत्थान का प्रतीक है, बल्कि प्रकृति के नाजुक संतुलन पर इंसानी प्रबंधन का एक बड़ा सबूत है. 17 सितंबर 2022 को पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रलाय की देखरेख में और राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) की अगुवाई में आरंभ किया गया प्रोजेक्ट चीता, जैवविविधता की पुनर्बहाली के प्रति भारत की अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक है. साल 2013 की कार्ययोजना और सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के आधार पर इसमें एशियाई चीते (एसिनोनिक्स जुबेटस, जिसे 1952 में भारत में विलुप्त घोषित कर दिया गया था) को एक खास प्रजाति के तौर पर फिर से लाने की बात कही गई है जिससे विशाल परिदृश्यों में इकोसिस्टम स्वास्थ्य को बढ़ावा दिया जा सके. दिसंबर 2025 तक कुनो में 30 चीते हैं. बोत्सवाना से भारत में आठ और चीते आने के साथ, यह प्रोजेक्ट उम्मीद की किरण बना हुआ है और अपने वैज्ञानिक श्रम और राजनयिक कौशल के लिए इसे अंतरराष्ट्रीय सराहना मिली है. जो एक संरक्षण प्रयोग के तौर पर आरंभ हुआ था, वह पारिस्थितिक उम्मीद और देश की प्रतिबद्धता का एक वक्तव्य बन गया है. प्रधानमंत्री मोदी का विजन और लगातार प्रोत्साहन प्रोजेक्ट चीता के पीछे प्रेरक शक्ति रहा है, जिसने दशकों पुराने सपने को जीती-जागती सच्चाई में बदल दिया है.

**पीएम मोदी ने लगातार की मॉनीटरिंग**

साल 2022 कार्य योजना बनाने और विश्व के पहले अंतर-महाद्वपीय चीता स्थानांतरण को आगे बढ़ाने से लेकर 17 सितंबर 2022 को कुनो नेशनल पार्क में खुद पहले आठ नामीबियाई चीतों को छोड़ने तक, वह हर चरण में पूरी तरह से जुड़े रहे हैं. उन्होंने नामीबिया (जुलाई 2022) और दक्षिण अफ्रीका (जनवरी 2023) के साथ उच्च स्तरीय समझौता ज्ञापन करवाए, मन की बात के ज़रिए लोगों को चीतों का नाम रखने के लिए आमंत्रित कर बुलाकर देश को जोड़ा और 2023 में पहले भारतीय शावकों के जन्म और नवंबर 2025 में ऐतिहासिक दूसरी पीढ़ी के शावकों के जन्म जैसी उपलब्धियों को लगातार जिक्र किया. दिसंबर 2025 तक देश में कुल 30 चीते हैं. 12 बड़े, 9 छोटे और 9 शावक, जिनमें 11 फाउंडर स्टॉक और 19 भारत में जन्मे चीते शामिल हैं. मिशन लाइफ और भारत के जी20 एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य की सोच से जोड़कर प्रधानमंत्री मोदी ने प्रोजेक्ट चीता को विज्ञान प्रेरित, समुदाय समावेशी रीवाइल्डिंग का वैश्विक प्रतीक बना दिया है, वह खुद इसकी प्रगति की निगरानी कर रहे हैं और यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि भारत में सात दशकों से खामोश चीते की दहाड़, एक बार फिर इसके पुराने घास के मैदानों में गूंजे.

## संक्षिप्त ख़बरें

### 3 राज्यों में तलाश, इंडो-नेपाल बॉर्डर तक पीछा... ब्लाइंड मर्डर केस का आरोपी बिहार से गिरफ्तार, दोस्त को मारा था

दिल्ली पुलिस के नॉर्थ वेस्ट डिस्ट्रिक्ट की आदर्श नगर थाने की पुलिस ने एक ब्लाइंड मर्डर केस को सुलझाते हुए हत्या के आरोपी सुमन कुमार झा को गिरफ्तार कर लिया है. आरोपी वारदात के बाद लगातार अपने ठिकाने बदलकर पुलिस से बचता रहा और गिरफ्तारी से बचने के लिए इंडो-नेपाल बॉर्डर तक पहुंच गया था. करीब दो महीने तक चली जांच, 150 से ज्यादा सीसीटीवी फुटेज की पड़ताल और कई राज्यों में दबिश के बाद पुलिस उसे पकड़ने में सफल रही.

**बॉर्डर इलाके मे छिपा था आरोपी**

तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर गुरुग्राम में रहने वाले सुमन कुमार झा की भूमिका इस ब्लाइंड मर्डर केस में सामने आई. इसके बाद आरोपी के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी कराया गया. जांच में पता चला कि आरोपी मूल रूप से नेपाल के सप्तरी जिले का रहने वाला है. पुलिस को सूचना मिली कि वह गिरफ्तारी से बचने के लिए इंडो-नेपाल बॉर्डर इलाके में छिपा हुआ है. इसके बाद पुलिस टीम ने सीमा इलाके में लगातार अभियान चलाया और मुखबिरों का नेटवर्क तैयार किया.

**पुलिस गिरफ्त से की भागने की कोशिश**

28 मई को पुलिस को पक्की सूचना मिली कि आरोपी अपने एक सहयोगी से मिलने के लिए बॉर्डर पार कर महादेव मठ की तरफ आने वाला है. सूचना के आधार पर पुलिस ने जाल बिछाया और उसे बिहार के मधुबनी जिले में ट्रेस कर लिया. पुलिस के अनुसार, गिरफ्तारी के दौरान आरोपी ने काफी विरोध किया. उसने पुलिसकर्मियों से हाथापाई की और भागने की भी कोशिश की. यहां तक कि मोटरसाइकिल से ले जाते समय भी कई बार वाहन को असंतुलित कर फरार होने का प्रयास किया, लेकिन पुलिस टीम ने सतर्कता दिखाते हुए उसे काबू में रखा.

## जज बनाम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस! सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक ड्राफ्ट 2026 AI सिर्फ एक असिस्टेंट, फैसला जज का!

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

टेक्नोलॉजी जिस तेजी से बदल रही है, उसने हमारी न्याय प्रणाली के दरवाजों पर भी दस्तक दे दी है. भारतीय अदालतों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई के औपचारिक इस्तेमाल की ओर एक बहुत बड़ा और ऐतिहासिक कदम बढ़ाया गया है. सुप्रीम कोर्ट ने अदालतों में एआई के इस्तेमाल को लेकर साल 2026 का पहला आधिकारिक ड्राफ्ट जारी कर दिया है. इस पर आम जनता और सभी हितधारकों से सुझाव मांगे हैं. हम आपको बताएंगे कि इस ड्राफ्ट में क्या नियम हैं, सुरक्षा के क्या उपाय हैं और क्या वाकई एआई भविष्य में जजों की जगह ले सकता है. सुप्रीम कोर्ट द्वारा जारी इस मसौदे का सबसे मुख्य उद्देश्य न्यायिक प्रक्रिया में मानवीय प्रधानता, जवाबदेही, डेटा सुरक्षा और न्यायिक स्वतंत्रता को बनाए रखना है. कोर्ट का साफ मानना है कि तकनीक का स्वागत है, लेकिन वह न्याय की मूल आत्मा को नहीं बदल सकती. इस ड्राफ्ट रेगुलेशन में साफ तौर पर कहा गया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग हर समय इंसानी निर्णय और न्यायिक अधिकार के पूरी तरह अधीन रहेगा. इसका मतलब यह है कि कोर्ट रूम के भीतर आखिरी और सर्वोच्च शक्ति सिर्फ और सिर्फ एक इंसान यानी माननीय जज के पास ही सुरक्षित रहेगी.

**भविष्य में एआई सिस्टम खुद फैसले सुनाने लगेंगे?**

इस ड्राफ्ट ने उन सभी आशंकाओं को पूरी तरह खारिज कर दिया है जिनमें कहा जा रहा था कि भविष्य में एआई सिस्टम खुद फैसले सुनाने लगेंगे. नियमों के मुताबिक, प्रत्येक एआई प्रणाली केवल एक सहायक यानी 'असिस्टेंट' की हैसियत से काम करेगी. यह किसी भी विधिवत नियुक्त न्यायिक अधिकारी यानी जज का स्थान कभी नहीं ले सकती. एआई का काम कानूनी रिसर्च को आसान बनाना, दस्तावेजों को खोजना और तारीखों को मैनेज करना हो सकता है लेकिन किसी भी मामले में दिमाग लगाने और न्याय करने का काम सिर्फ इंसानी जज ही करेंगे. कानून, तथ्यों और न्याय से संबंधित किसी भी मामले का निर्धारण करने का अंतिम और पूर्ण अधिकार केवल न्यायाधीशों के पास ही सुरक्षित रखा गया है. ड्राफ्ट रेगुलेशन यह स्पष्ट करता है कि कोई भी एआई सिस्टम किसी भी मामले में, बिना मानवीय हस्तक्षेप के, न तो कोई निर्णय दे सकता है और न ही किसी दोषी को सजा सुना सकता है. ऐसा इसलिए किया गया है ताकि किसी तकनीकी खराबी, एल्गोरिदम की गलती या डेटा बायस (पूर्वाग्रह) के कारण किसी बेगुनाह को सजा न मिल जाए. न्याय में करुणा, विवेक और मानवीय समझ की जरूरत होती है, जो किसी मशीन के पास नहीं हो सकती.

**इंसान की अंतरात्मा से चलता है इंसाफ का तराजू**

तकनीक कितनी भी आधुनिक हो जाए, वह अदालतों के काम को रफ्तार तो दे सकती है, लेकिन इंसाफ का जो तराजू एक इंसान की अंतरात्मा से चलता है, उसकी जगह कभी नहीं ले सकती. इसी जज्बात को बयां करते हुए मशहूर शायर अल्लामा इकबाल का एक शेर याद आता है:

**'दिल-ए-बीना भी कर खुदा से तलब, आँख का नूर दिल का नूर नहीं।'**

यानी कि सिर्फ आंखों की बाहरी और तकनीकी रोशनी काफी नहीं है, इंसाफ के लिए दिल की आंतरिक समझ और विवेक का होना सबसे जरूरी है, जो केवल इंसान के पास है. साफ है कि सुप्रीम कोर्ट का यह ड्राफ्ट रेगुलेशन 2026 भविष्य की न्याय प्रणाली को सुरक्षित और आधुनिक बनाने का एक बेहतरीन खाका है, जहां तकनीक मददगार तो होगी लेकिन मालिक नहीं.

## माफिया पहले चूहे की तरह बिदकते थे, अब मिट्टी में मिल गए सीएम योगी का बड़ा हमला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को बलरामपुर में समाजवादी पार्टी पर जमकर हमला बोला. उन्होंने कहा कि उनके शासन में माफिया मिट्टी में मिल गए. आज कोई खतरा नहीं है. आज उत्तर प्रदेश के लोगों को सम्मान मिलता है. आज यूपी की पहचान विकास के लिए हो रही है. आज यूपी की पहचान सबसे ज्यादा निवेश के लिए हो रही है. उन्होंने कहा किमाफिया को चुन कर भेजोगे तो खून भी चूस डालेगा. विकास का पैसा लौटेगा ही, संपत्तियों पर भी कब्जा कर लेगा. ये माफिया पहले चूहे की तरह बिदकते थे, बाद में सूअर बन कर पूरे प्रदेश को तबाह करने में आमादा हो गए थे. उन्होंने कहा कि चुनाव में अच्छे लोगों को चुनकर भेजना चाहिए तो अच्छे परिणाम आएंगे. जातिवाद, परिवारवाद से ऊपर उठ कर काम करना होगा जातिवादी, परिवारवादी लोगों के जमाने में सिर्फ एक परिवार और गांव का विकास होता था. सीएम योगी ने कहा कि 2017 से पहले गरीब को राशन नहीं मिलता था, ये सब सपा के गुंडे खा जाते थे. गरीब देखता रह जाता था. आज कार्ड उपलब्ध कराया है और गरीब को फ्री में राशन मिल रहा है. कोई भेदभाव नहीं है. गरीब के घर में शौचालय उपलब्ध कराया जा रहा है. गांव में ही आय प्रमाण पत्र भी उपलब्ध कराया जा रहा है.

**सभी को सुरक्षा और योजना का मिल रहा लाभ**

उन्होंने कहा कि गरीब के लिए आयुष्मान भारत की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है. 2017 से पहले यह सपना हुआ करता था. एक ओर गरीबों को कल्याण योजनाओं का लाभ और उनके उत्थान के लिए काम किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि बहन और बेटियों की सुरक्षा की व्यवस्था की जा रही है.किसी ने बेटी को छेड़ने का दुस्साहस किया, व्यापारी की सुरक्षा में सेंध लगाने की कोशिश की तो ऐसे में किसी को अनावश्यक छेड़ेंगे नहीं, यदि किसी ने छेड़ने की कोशिश की तो छोड़ेंगे नहीं.

**राज्य दंगा और गुंडागर्दी से मुक्त है**

सीएम योगी ने कहा कि मुझे याद है कि इसी जनपद में जब भी दुर्गा पूजा होता था. दंगे हो जाते थे. मुझे गोरखपुर छोड़कर कभी-कभी आना होता था, लोगों की सुरक्षा के लिए. आज उत्तर प्रदेश में 75 जनपद हैं, 762 नगर निकाय है. 14000 वार्ड हैं, 57000 से अधिक ग्राम पंचायत हैं. दंगा और गुंडागर्दी से मुक्त है. सीएम योगी ने कहा कि पिछले नौ सालों में डबल इंजन की सरकार ने स्पीड से काम करना शुरू किया. उन्होंने कहा कि चुनौतियों के बावजूद बिजली की समस्या का समाधान किया जा रहा है. उत्तर प्रदेश तेजी से बढ़ रहा है.

## मौलाना तौकीर रजा को बड़ा झटका, बरेली कोर्ट के बाद अब इलाहाबाद HC से भी जमानत अर्जी खारिज

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मौलाना तौकीर रजा खान को बड़ा झटका लगा है. बरेली हिंसा को लेकर बारादरी थाने में दर्ज मामले में तौकीर ने जमानत के लिए इलाहाबाद हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था, जहां जस्टिस अरुण कुमार सिंह देशवाल की सिंगल बेंच ने जमानत अर्जी खारिज कर दी है. इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल (IMC) के प्रमुख और बरेली हिंसा के मास्टरमाइंड मौलाना तौकीर रजा को फिलहाल जेल में ही रहना होगा. बरेली में 26 सितंबर 2025 को हिंसा हुई थी. इसी दिन पुलिस ने बरेली के बारादरी, कोतवाली, कैंट, किला और प्रेम नगर थाने में एफआईआर दर्ज की थी, जिसमें तौकीर रजा को मास्टरमाइंड बताया गया. इसके बाद तौकीर ने बरेली कोर्ट में जमानत याचिका दाखिल की थी जो कि खारिज हो गई थी. फिर उन्होंने इलाहाबाद हाई कोर्ट में जमानत अर्जी दायर की थी.

**क्या है पूरा मामला?**

दरअसल, बरेली में मौलाना तौकीर रजा के आह्वान पर जुटे लोगों ने आई लव मोहम्मद के मुद्दे को लेकर नारेबाजी की थी. पुलिस-प्रशासन की सख्ती के बावजूद लोग सड़क पर उतरे और प्रदर्शन किया. इतना ही नहीं पुलिस के बैरिकेड तोड़ दिए. फिर पुलिस ने लाठीचार्ज किया. इससे लोगों में आक्रोश बढ़ गया. फिर भड़काऊ नारे लगाते हुए भीड़ ने पुलिस की चेतावनी को नजरअंदाज किया. आगे बढ़ने पर अड़े रहे. इससे स्थिति और बिगड़ गई.

**पुलिस पर हमला**

आरोप है कि इसके बाद भीड़ में शामिल लोगों ने पुलिस बल पर ईंटें, पत्थर और एसिड की बोतलें फेंकी. इतना ही नहीं पुलिसकर्मियों पर गोलीबारी भी की. हिंसा में पुलिसकर्मियों के कपड़े फट गए. दो अधिकारी घायल हुए. भीड़ की आक्रामक कार्रवाई ने क्षेत्र में आतंक का माहौल बनाया. फिर बातचीत के माध्यम से भीड़ को समझाने में विफल रहने के बाद पुलिस अधिकारियों को आत्मरक्षा में गोली चलानी पड़ी. इस केस में बीते महीनेइलाहाबाद हाईकोर्ट ने तौकीर रजा खान की जमानत अर्जी समेत 58 याचिकाओं पर फैसला सुरक्षित रखा था. जस्टिस आशुतोष श्रीवास्तव की एकल पीठ ने 58 याचिकाओं पर एक साथ सुनवाई की थी. अभियोजन पक्ष की ओर से जमानत का विरोध करते हुए कहा गया कि 26 सितंबर को बरेली में नमाज के बाद हिंसा साजिश का हिस्सा थी.

# विकास मॉडल बनाम मानव अस्तित्व




मानव इतिहास में शायद पहली बार ऐसा समय आया है जब सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धियाँ ही उसके अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा संकट बनती दिखाई दे रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल क्रांति, औद्योगिक विस्तार, वैश्विक व्यापार और तेज आर्थिक विकास को आधुनिक युग की सफलता माना गया, लेकिन इसी विकास मॉडल ने पृथ्वी के प्राकृतिक संतुलन को गहराई से प्रभावित किया है। वर्ष 2026 का अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस केवल एक औपचारिक वैश्विक आयोजन नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के आत्ममंथन का अवसर है। अब प्रश्न केवल पेड़ बचाने या प्रदूषण कम करने का नहीं रहा; प्रश्न यह है कि क्या वर्तमान विकास मॉडल भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित पृथ्वी छोड़ पाएगा।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम, विश्व मौसम संगठन और विभिन्न जलवायु संस्थाओं की रिपोर्टें लगातार यह संकेत दे रही हैं कि पृथ्वी तेजी से जलवायु अस्थिरता की ओर बढ़ रही है। वैश्विक तापमान औद्योगिक क्रांति के बाद से लगभग 1.1 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ चुका है। पहली नजर में यह वृद्धि सामान्य लग सकती है, लेकिन इसके प्रभाव अत्यंत गंभीर हैं। ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, समुद्र स्तर बढ़ रहा है, जैव विविधता घट रही है और मौसम की पारंपरिक संरचना टूटती जा रही है। भारत जैसे देश के लिए यह संकट केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक चुनौती भी है। भारत विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश है, जहाँ विकास की आवश्यकता भी विशाल है और संसाधनों पर दबाव भी अत्यधिक है। लेकिन समस्या केवल जनसंख्या नहीं है। वास्तविक समस्या वह विकास मॉडल है जो संसाधनों के अनियंत्रित दोहन को प्रगति का पर्याय मानता है।

दिल्ली, लखनऊ, कानपुर और मुंबई जैसे शहरों में वायु प्रदूषण अब मौसमी समस्या नहीं, बल्कि स्थायी सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट बन चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रदूषित वायु से लाखों लोगों की समयपूर्व मृत्यु होती है। विडंबना यह है कि प्रदूषण से सबसे अधिक प्रभावित वही वर्ग होता है जिसके पास सुरक्षा के साधन सबसे कम हैं। मजदूर, रिक्शा चालक, निर्माण श्रमिक और सड़क किनारे रहने वाले परिवार जहरीली हवा में जीवन बिताने को मजबूर हैं, जबकि संपन्न वर्ग एयर प्यूरीफायर और बंद परिसरों में स्वयं को सुरक्षित कर लेता है। इस दृष्टि से पर्यावरणीय संकट सामाजिक असमानता का भी प्रश्न है।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में संकट का स्वरूप और अधिक गंभीर है। बुंदेलखंड, मराठवाड़ा और विदर्भ जैसे क्षेत्रों में लगातार जल संकट ने कृषि अर्थव्यवस्था को कमजोर किया है। अनियमित मानसून और भूजल के अत्यधिक दोहन ने किसानों की निर्भरता बढ़ा दी है। हरित क्रांति ने उत्पादन बढ़ाया, लेकिन रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग ने मिट्टी की उर्वरता को प्रभावित किया। लंबे समय तक कृषि नीति केवल उत्पादन बढ़ाने तक सीमित रही, जबकि मिट्टी, जल और जैव विविधता की स्थिरता पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया। वास्तविकता यह है कि आधुनिक अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा 'अधिक उत्पादन और अधिक उपभोग' के सिद्धांत पर आधारित है। वैश्विक बाजार व्यवस्था लगातार नई आवश्यकताएँ पैदा करती है। मोबाइल फोन से लेकर कपड़ों और वाहनों तक, उपभोग को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ दिया गया है। परिणामस्वरूप इलेक्ट्रॉनिक कचरा, प्लास्टिक प्रदूषण और ऊर्जा खपत अभूतपूर्व स्तर तक पहुँच गई है। विडंबना यह है कि टिकाऊ विकास की बात करने वाले समाज स्वयं अत्यधिक उपभोक्तावादी जीवनशैली अपनाए हुए हैं। आज पर्यावरणीय विमर्श की सबसे बड़ी समस्या यह है कि इसे अक्सर भावनात्मक अभियान बनाकर प्रस्तुत किया जाता है, जबकि यह मूलतः आर्थिक और राजनीतिक संरचना का विषय है। जब कोई उद्योग जंगल काटता है, नदी प्रदूषित करता है या खनन के नाम पर स्थानीय समुदायों को विस्थापित करता है, तब वह केवल पर्यावरणीय नुकसान नहीं करता; वह सामाजिक असंतुलन और आर्थिक असुरक्षा भी पैदा करता है।

हिमालयी क्षेत्रों में अनियोजित निर्माण इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में लगातार बढ़ते भूस्खलन, बाढ़ और भू-क्षरण केवल प्राकृतिक घटनाएँ नहीं हैं। सड़कों, सुरंगों, होटल निर्माण और अवैज्ञानिक पर्यटन मॉडल ने पर्वतीय पारिस्थितिकी को अस्थिर बना दिया है। लेकिन विकास की बहस में इन प्रश्नों को अक्सर 'प्रगति विरोधी सोच' कहकर खारिज कर दिया जाता है। एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पर्यावरणीय संकट का प्रभाव वैश्विक राजनीति को भी प्रभावित कर रहा है। जल संकट, खाद्य असुरक्षा और जलवायु आधारित विस्थापन आने वाले दशकों में अंतरराष्ट्रीय संघर्षों को बढ़ा सकते हैं। अफ्रीका और एशिया के अनेक क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन पहले ही आर्थिक अस्थिरता और पलायन को प्रभावित कर रहा है। भविष्य में यह समस्या राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जुड़ सकती है।

भारत में पर्यावरण नीति की सबसे बड़ी कमजोरी क्रियान्वयन की कमी है। पर्यावरण प्रभाव आकलन रिपोर्टें अक्सर औपचारिक प्रक्रिया बनकर रह जाती हैं। नगरों में कचरा प्रबंधन योजनाएँ घोषित तो होती हैं, लेकिन अधिकांश शहरों में वैज्ञानिक अपशिष्ट प्रबंधन अब भी अधूरा है। नदियों की सफाई के लिए हजारों करोड़ रुपये खर्च किए जाते हैं, फिर भी प्रदूषण का स्तर चिंताजनक बना रहता है। इसका कारण केवल संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि दीर्घकालिक नीति दृष्टि का अभाव है।

पर्यावरणीय संकट को केवल सरकारों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। समाज की जीवनशैली में परिवर्तन भी उतना ही आवश्यक है। सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, ऊर्जा बचत, जल संरक्षण और सीमित उपभोग जैसी आदतों को सामाजिक संस्कृति का हिस्सा बनाना होगा। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा को केवल परीक्षा विषय की तरह नहीं, बल्कि व्यवहारिक जीवन कौशल की तरह पढ़ाया जाना चाहिए। इसके साथ ही स्थानीय समुदायों और पारंपरिक ज्ञान को भी महत्व देना आवश्यक है। राजस्थान के पारंपरिक जल संरक्षण मॉडल, पूर्वोत्तर के सामुदायिक वन प्रबंधन और ग्रामीण भारत की जैविक कृषि पद्धतियाँ आज भी टिकाऊ विकास के उपयोगी उदाहरण हैं। आधुनिक नीति निर्माण ने अक्सर इन अनुभवों को नजरअंदाज किया है। तकनीकी समाधान निश्चित रूप से आवश्यक हैं। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन और हरित अधोसंरचना भविष्य के महत्वपूर्ण विकल्प हो सकते हैं। लेकिन यह समझना होगा कि केवल तकनीक पर्यावरणीय संकट का पूर्ण समाधान नहीं दे सकती। यदि उपभोग और संसाधन दोहन की वर्तमान गति जारी रही, तो हरित तकनीक भी सीमित प्रभाव ही डाल पाएगी।

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या मानव समाज विकास की अपनी परिभाषा बदलने के लिए तैयार है? आज विकास को मुख्यतः जीडीपी वृद्धि, निर्माण और उपभोग से मापा जाता है। लेकिन यदि आर्थिक विकास के साथ प्रदूषण, जल संकट, स्वास्थ्य समस्याएँ और सामाजिक असमानता भी बढ़ रही हो, तो उस विकास की स्थिरता पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है। भारत 'विकसित भारत 2047' की दिशा में आगे बढ़ रहा है। यह लक्ष्य महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक है, लेकिन यदि विकास का मॉडल प्रकृति विरोधी रहा, तो भविष्य की आर्थिक उपलब्धियाँ भी अस्थिर हो जाएँगी। विकसित राष्ट्र केवल ऊँची इमारतों, एक्सप्रेस-वे और औद्योगिक उत्पादन से नहीं बनते; वे टिकाऊ संसाधन प्रबंधन, स्वच्छ पर्यावरण और सामाजिक संतुलन से बनते हैं।

अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस 2026 मानव सभ्यता के लिए स्पष्ट चेतावनी है। अब यह बहस का विषय नहीं कि पर्यावरण संरक्षण आवश्यक है या नहीं। वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या सरकारें, उद्योग और समाज अल्पकालिक लाभ से ऊपर उठकर दीर्घकालिक अस्तित्व को प्राथमिकता देने के लिए तैयार हैं। यदि उत्तर नकारात्मक रहा, तो आने वाले वर्षों में जलवायु संकट केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं रहेगा; वह वैश्विक अर्थव्यवस्था, राजनीतिक स्थिरता और मानव सुरक्षा का सबसे बड़ा संकट बन जाएगा। इसलिए अब समय केवल प्रतीकात्मक अभियानों का नहीं, बल्कि कठोर और वैज्ञानिक निर्णयों का है। विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन कोई वैकल्पिक विचार नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की अनिवार्य शर्त बन चुका है।

**अवनीश कुमार गुप्ता**

## देश में अवैध निर्माणों के हादसों से कब तक लीलती रहेगी आम जिंदगानी?



देश की राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली से न्यायपालिका, कार्यपालिका और व्यवस्थापिका के माध्यम से राष्ट्र का संचालन किया जाता है। नई दिल्ली एक राज्य भी है, जिसके नागरिकों की सुरक्षा और सुविधाओं की जिम्मेदारी राज्य सरकार तथा जिला प्रशासन पर है। किंतु विडंबना यह है कि अवैध निर्माण आज देश के लिए नासूर बन चुके हैं। इस समस्या की त्रासदीपूर्ण पीड़ा केवल राष्ट्रीय राजधानी तक सीमित नहीं है, बल्कि देश के राज्यों की राजधानियों, महानगरों, नगरों, शहरों, कस्बों और गांवों तक फैल चुकी है। दिल्ली के मालवीय नगर स्थित एक होटल में हुए भीषण अग्निकांड में 21 देशी-विदेशी लोगों की दर्दनाक मौत ने एक बार फिर उस भयावह सच्चाई को उजागर कर दिया है, जहां रसूख और प्रभाव के आगे आम जनजीवन का कोई मूल्य नहीं रह जाता। देश में कहीं जर्जर और अवैध भवनों के ढहने से, कहीं अवैध रूप से तनी बहुमंजिला इमारतों में आग लगने से, कहीं जल निकासी मार्गो पर अतिक्रमण के कारण जलभराव से, तो कहीं अव्यवस्थित निर्माणों के चलते भगदड़ जैसी घटनाओं से आम नागरिकों की जानें लगातार जा रही हैं। इसके बावजूद प्रशासन अक्सर केवल कागजी कार्रवाई कर, गैर-इरादतन हत्या की एफआईआर दर्ज कर अपनी जिम्मेदारी की इतिश्री कर लेता है।

एक और हम लोकतांत्रिक व्यवस्था के तहत केंद्र, राज्य, महानगर, नगर और ग्राम पंचायत स्तर तक सरकार होने का दावा करते हैं, वहीं दूसरी ओर इन्हीं संस्थाओं और प्रशासनिक तंत्र की नाक के नीचे अवैध निर्माण कैसे खड़े हो जाते हैं? यह प्रश्न व्यवस्था की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़ा करता है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हादसे होने और लोगों की जान जाने के बाद ही शासन-प्रशासन की तंद्रा टूटती है। तब संबंधित निर्माणों को अवैध घोषित कर दिया जाता है और दोषियों पर औपचारिक कार्रवाई शुरू होती है। प्रश्न यह है कि यदि नियमों को ताक पर रखकर बने ऐसे निर्माणों में लोगों की मृत्यु होती है, तो इसे केवल गैर इरादतन हत्या ही क्यों माना जाता है ? क्या अवैध निर्माण के मालिकों के साथ साथ उन प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों को भी जवाबदेह नहीं ठहराया जाना चाहिए, जिनकी अनदेखी या मिलीभगत से ऐसे निर्माण संभव हुए ? मालवीय नगर की त्रासदी केवल दिल्ली सरकार के लिए ही नहीं, बल्कि देश की सभी राज्य सरकारों के लिए एक गंभीर चेतावनी है। आवश्यकता इस बात की है कि राज्यों की राजधानियों से लेकर ग्राम पंचायत स्तर तक सभी प्रकार के अवैध निर्माणों के विरुद्ध व्यापक और सतत अभियान चलाया जाए। अवैध निर्माण करने वालों तथा उन्हें संरक्षण देने वाले जिम्मेदार व्यक्तियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई हो। साथ ही, ऐसे निर्माणों के कारण होने वाली मौतों को गंभीर आपराधिक उत्तरदायित्व की श्रेणी में रखते हुए दोषियों की जवाबदेही सुनिश्चित की जाए। तभी अवैध निर्माणों पर प्रभावी अंकुश लग सकेगा और आम नागरिकों के जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।

आज देश का कड़वा सच यह है कि कहीं धनबल, कहीं बाहुबल और कहीं राजनीतिक रसूख के बल पर भू-माफिया शासकीय भूमि पर अतिक्रमण कर रहे हैं। नदियों, तालाबों और पहाड़ों का अस्तित्व सिकुड़ता जा रहा है। महानगरों, नगरों, कस्बों और गांवों में सार्वजनिक मार्गों तथा जल निकासी तंत्र पर अतिक्रमण कर लोगों की सुरक्षा को खतरे में डाला जा रहा है। यह स्थिति केवल कानून के उल्लंघन का मामला नहीं, बल्कि जनजीवन के साथ खिलवाड़ है। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि हर वर्ष आगजनी, जलभराव, भवन दुर्घटनाओं और भगदड़ जैसी घटनाओं में लोगों की मौत के बाद भी शासन-प्रशासन की जवाबदेही तय नहीं हो पाती। यही लचर व्यवस्था इन हादसों की पुनरावृत्ति का प्रमुख कारण है। जब तक देश का जनमानस अवैध निर्माणों से होने वाली मौतों के प्रति जागरूक होकर शासन और प्रशासन से जवाब नहीं मांगेगा, तब तक ऐसे निर्माण होते रहेंगे और मालवीय नगर जैसी त्रासदियां आम जनजीवन को लीलती रहेंगी। दिल्ली के मालवीय नगर की हृदय विदारक घटना से पूरे देश को सबक लेने की आवश्यकता है। मानव सुरक्षा मानकों की अनदेखी कर बनाए गए प्रत्येक अवैध और असुरक्षित निर्माण को जनहित में ध्वस्त करना केवल शासन-प्रशासन ही नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की भी जिम्मेदारी है। विकास तभी सार्थक होगा, जब उसके केंद्र में मानव जीवन की सुरक्षा, कानून का सम्मान और जवाबदेही की सुदृढ़ व्यवस्था होगी। तभी हम एक सुरक्षित, सुव्यवस्थित और संवेदनशील भारत का निर्माण कर सकेंगे।

**अरविंद रावल**

# देश की राजनीति का मानक हैं योगी आदित्यनाथ

आप जरा कल्पना किजिए नौ साल पहले के उत्तर प्रदेश की जहां माफिया थाने में पहुंच कर पुलिस वालों को बंधक बनाने का दुस्साहस कर रहे थे एक ओर भ्रष्टाचार अपहरण हत्या फिरौती सरकारी ठेकों पर बपौती का धंधा चरम पर था वहीं एक नेता आइएएस से जूते साफ कराने की मंशा खुलेआम माइक पर बोल रहे थे हर तरफ अराजकता सेकुलरिज्म के नाम पर एक खास समुदाय के लोगों को खुश करने के लिए खुला संरक्षण बदहाल स्वास्थ्य सेवाएं दिमागी बुखार से हर साल मरते सैकड़ों बच्चे दूसरी ओर सरकारी धन पर जंगल सफारी और सैफई महोत्सव में मुंबईया हीरोइनों के नृत्य घटता निवेश और डूबते उध्योग माफियाओं की धमकियों से असुरक्षित उध्यमी। 2017 में उत्तर प्रदेश के भाग्य में बदलाव आया और योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। यहां से उत्तर प्रदेश में बदलाव और विकास का नया वातावरण तैयार हुआ है।

उत्तर प्रदेश की राजनीति में योगी आदित्यनाथ एक ऐसे तेजस्वी और तपस्वी नेता हैं, जिन्होंने साधु-सन्यासी की मर्यादा और कुशल प्रशासक के गुणों को एक साथ साधा है। जिनका जीवन सनातन मूल्यों, राष्ट्रीय चेतना और लोकसेवा के लिए पूर्णतः समर्पित है। भगवा जिनके लिए गौरव ही नहीं बल्कि अस्तित्व है। एक ओर वे गोरखनाथ मठ के पीठाधीश्वर हैं, जहां वे धार्मिक और आध्यात्मिक परंपराओं का पालन करते हैं, वहीं दूसरी ओर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में वे कानून, व्यवस्था और विकास का आधुनिक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। शासन में उनकी छवि एक कठोर लेकिन न्यायप्रिय प्रशासक की है, जो जनहित को सर्वोपरि रखता है। गरीब-दलित-पिछड़ों की आवाज, हर फरियादी के लिए दिन-रात उपलब्ध योगी जी असल में एक जननायक हैं।उनके संपत्ति में मात्र चार जोड़ी गेरूआ सूती कपड़े है। पैर में भी सिर्फ साधारण कपड़े के जूते पहनते हैं।

योगी आदित्यनाथ का दिन 4 बजे ब्रह्ममुहूर्त में उठकर साधना और प्रार्थना से शुरू होता है। उनका मानना है कि आत्मानुशासन ही सच्चे नेतृत्व की पहली सीढ़ी है। उनका जीवन संयमित, सादा और पूर्णतः सात्विक है न कोई दिखावा, न कोई विलासिता। गोरखनाथ मंदिर में गौसेवा हो या मंदिर परिसर की सादगी, हर पहलू उनके सेवा और साधना भाव का परिचायक है।

भारत की राजनीति में एक कर्मठ योगी, हार्ड लीडरशिप, यूनिवर्सल ट्रांसपोर्टर, अपारजन समर्थक प्राप्तकर्ता हैं योगी आदित्य नाथ। जनता से सीधे-सीधे उन्हें लोकप्रिय नेता बना दिया। उनके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश को कानून, व्यवस्था, बुनियादी ढांचे की प्रगति, रैपिड डिवेलपमेंट मॉडल में अग्रणी प्रदेश बनाया गया। इससे उत्तर प्रदेश का भविष्य ही बदल गया। योगी आदित्यनाथ का मूल नाम अजय सिंह विष्ट है। उनका जन्म उत्तराखंड के पौडी गढ़वाल जिले के एक सामान्य से परिवार में 05 जून 1972 को हुआ था। आदित्यनाथ बचपन से ही पढ़ाई में प्रखर और समाज के लिए कार्य करने के लिए आगे रहते थे ।

हेमवती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में बी.एससी. छात्र राजनीति एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने उन्हें तर्कशीलता, निर्णय लेने की क्षमता और विश्लेषण क्षमता प्रदान की।

शिक्षा प्राप्ति के बाद उनके अध्यात्म की ओर रुचि हुई। उन्हे महंत अवैध्यनाथ का सानिध्य प्राप्त हुआ। यहीं से उनके संन्यासी जीवन की शुरुआत हुई। बाद में 1994 में गोरखनाथ मठ के महंत धार्मिक कार्यकर्ताओं का नेतृत्व, सामाजिक सेवा और जनसम्पर्क उनके जीवन का हिस्सा बन गये। योगी आदित्यनाथ 26 वर्ष की आयु में गोरखपुर लोकसभा सीट से सांसद बने। उनके स्पष्ट विचार एवं सशक्त जनाधार एवं सीधे संवाद ने उन्हें लोकप्रिय बनाया। गोरखपुर से पांचवी बार सांसद बने और राजनीति का प्रमुख चेहरा बने।

सन 2017 में भारतीय जनता पार्टी से वे उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री बने। उनका नेतृत्व प्रदेश में होने के कारण कठोर अनुशासन, न्याय पूर्ण शासन शैली पर लक्ष्य लगा। उनके शासन में अपराध और अपराध पर नियंत्रण किया गया। माफियाओं से जब्त अवैध कब्जे की संपत्तियों पर गरीबों के लिए आवास बना कर दिये जा रहे हैं। गाजियाबाद जनपद मे सरकारी भूमि पर बनाया गया मदरसा ध्वस्त कर दिया गया है। यूपी में अराजकता सांप्रदायिक घृणा विद्वेष के चलते छात्र की कुर्बानी कर हत्या करने वाले मुख्य अभियुक्त को पुलिस ने मुठभेड़ में ढेर कर असामाजिक तत्वों को सख्त संदेश दिया है।

कराना सम्भल जैसे क्षेत्रों में बहुसंख्यकों को पलायन के लिए मजबूर करने वाले तत्वों पर सख्त कार्रवाई कर सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित किया गया है प्रदेश में सुरक्षा व्यवस्था मजबूत हुई। पूर्वाचल एक्सप्रेस-वे बुंदेल खंड एक्सप्रेस-वे गंगा एक्सप्रेस-वे हिंडन जेवर हवाई अड्डे मेट्रो परियोजनाओं को मूर्त रूप दिया गया है। इन



परियोजनाओं के कारण प्रदेश का विकास गतिवान हो रहा है रोजगार मे उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। प्रदेश में वैश्विक निवेशक शामिल, प्रदेश में भारी निवेश बढ़ा। शहरी विकास और काशी विश्वनाथ मंदिर अयोध्या, मथुरा और बनारस का पुन निर्माण अयोध्या दीप उत्सव की विश्व में पहचान खेती और किसानों को पर्याप्त संरक्षण सिचाई फसल बीमा बिजली व्यवस्था मे सुधार कुशल नेतृत्व अद्भुत निर्णय क्षमता सभी की सराहना का विषय बना हुआ है। मिशन शक्ति और बेटी व नारी सुरक्षा के लिए ज़ीरो टालरेंस नीति अनुशासित कठोर शासक आध्यात्मिक होने के साथ-साथ व्यावहारिक मानसिकता और कार्यशैली देश विदेश में लोकप्रिय हो रही है।

यूपी मॉडल भारत की राजनीति में नामांकन रहता है। अन्य राज्यों की जनता भी यूपी मॉडल की मांग करती है।आज योगी आदित्यनाथ को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के उत्तराधिकारी बतौर माना जा रहा है। ऐसे वीतराग संयासी के हाथों में यूपी जैसे राज्य ने अपराध और माफिया के खिलाफ एक बड़ी जंग जीत कर कानून व्यवस्था का राज कखयम किया है। ऐसे विरल व्यक्तित्व निसंदेह भारत के स्वर्णिम भविष्य के रचियता बनेंगे इसमे कोई संदेह नहीं है। **मनोज कुमार अग्रवाल**

## शिक्षा का बाजारीकरण और छात्रों का भविष्य

भारत में शिक्षा अब केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं रह गई है। यह धीरे धीरे एक विशाल व्यापार में बदल चुकी है। इस व्यापार का सबसे चमकदार और सबसे खतरनाक चेहरा निजी प्रतियोगी शिक्षण उद्योग है। शहरों की दीवारों से लेकर चलभाष पटल तक हर जगह सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की मुस्कान, चयनित विद्यार्थियों की तस्वीरें और सफलता के बड़े बड़े दावे दिखाई देते हैं। ऐसा माहौल बना दिया गया है कि बिना इन संस्थानों के सफलता असंभव लगने लगती है। लाखों परिवार अपनी आर्थिक स्थिति से ऊपर उठकर बच्चों को इन केंद्रों में भेज रहे हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यही उनके भविष्य का एकमात्र रास्ता है। सरकारी सर्वेक्षणों के अनुसार आज भारत में लगभग 27 से 33 प्रतिशत छात्र किसी न किसी प्रकार की निजी शिक्षा ले रहे हैं। शहरी क्षेत्रों में यह संख्या और अधिक है। दिल्ली जैसे शहरों में लगभग 39 प्रतिशत छात्र इन संस्थानों से जुड़े हुए पाए गए हैं। यह आंकड़ा केवल शिक्षा की स्थिति नहीं बताता बल्कि उस मानसिक दबाव को भी दिखाता है जिसमें समाज जी रहा है। विद्यालयों और महाविद्यालयों पर भरोसा कम हुआ है और इन व्यापारिक केंद्रों को सफलता का संक्षिप्त मार्ग मान लिया गया है।

सबसे चिंताजनक बात यह है कि इस उद्योग का बड़ा हिस्सा शिक्षा से ज्यादा विपणन पर टिका हुआ है। आज आभासी माध्यमों से छात्रों को जोड़ने का काम बड़े स्तर पर किया जा रहा है। एक प्रतिवेदन के अनुसार लगभग 62 प्रतिशत प्रवेश अब अंतर्जाल आधारित प्रचार के माध्यम से हो रहे हैं। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा अब विज्ञापन और पहचान निर्माण के उसी प्रतिरूप पर चल रही है जिस पर कोई बड़ा व्यावसायिक प्रतिष्ठान चलता है। फर्क केवल इतना है कि यहां उत्पाद कोई वस्तु नहीं बल्कि छात्रों का भविष्य है। इन संस्थानों की सबसे बड़ी चाल उनका चयन प्रदर्शन होता है। हजारों और लाखों छात्रों की भीड़ में यदि 5 या 10 छात्रों का चयन हो जाए तो वही चेहरे हर विज्ञापन पट्ट पर दिखाई देने लगते हैं। ऐसा माहौल तैयार किया जाता है कि हर छात्र को लगे कि अगला चेहरा उसी का होगा। लेकिन कोई यह नहीं पूछता कि बाकी हजारों छात्रों का क्या हुआ। वे छात्र जो वर्षों तक शुल्क भरते रहे, जो किराये के कमरों में रहकर तैयारी करते रहे, जिनके परिवार कर्ज में डूब गए, उनका संघर्ष किसी विज्ञापन में जगह नहीं पाता। यहां सबसे बड़ा खेल संख्या का है। कुछ संस्थान कम शुल्क रखकर गरीब और मध्यमवर्गीय छात्रों की भारी भीड़ जुटाते हैं। 1000 या 2000 रुपये का शुल्क सुनकर छात्रों को लगता है कि उन्हें बहुत बड़ा अवसर मिल रहा है। लेकिन जब ऐसे लाखों छात्र जुड़ते हैं तो वही छोटी रकम करोड़ों का कारोबार बना देती है। कम शुल्क का मतलब सेवा भावना नहीं होता। कई बार यह भीड़ इकट्ठा करने की रणनीति होती है। जितनी बड़ी भीड़, उतना बड़ा मुनाफा और उतनी ही बड़ी सफलता की कहानी। विडंबना यह है कि छात्र मेहनत अपनी करते हैं लेकिन श्रेय पूरा संस्थान ले जाता है। यदि कोई छात्र सफल हो जाए तो संस्था कहती है कि यह उसकी शिक्षा का परिणाम है। लेकिन यदि लाखों छात्र असफल हो जाएं तो उसकी जिम्मेदारी कोई नहीं लेता। असफल छात्र को कहा जाता है कि उसने पर्याप्त मेहनत नहीं की। इस तरह सफलता संस्थान की और असफलता छात्र की बना दी जाती है। आज इस उद्योग ने छात्रों की मानसिकता भी बदल दी है। पहले शिक्षा का उद्देश्य समझ विकसित करना होता था। अब शिक्षा केवल परीक्षा पास करने तक सीमित। **महेन्द्र तिवारी**

## दैनिक राशिफल

**मेष** आज आत्मविश्वास बढ़ेगा। कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। आर्थिक मामलों में लाभ के संकेत हैं। परिवार का सहयोग मिलेगा।
**शुभ रंग:** लाल 7 **शुभ अंक:** 9

**वृषभ** धैर्य और समझदारी से काम लें। खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरीपेशा लोगों को अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।
**शुभ रंग:** सफेद 7 **शुभ अंक:** 6

**मिथुन** करियर में प्रगति के अवसर मिल सकते हैं। मित्रों से लाभ होगा। विद्यार्थियों के लिए दिन अनुकूल है। यात्रा का योग बन सकता है।
**शुभ रंग:** हरा 7 **शुभ अंक:** 5

**कर्क** कार्यस्थल पर मेहनत का अच्छा परिणाम मिलेगा। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। निवेश सोच-समझकर करें।
**शुभ रंग:** सिल्वर 7 **शुभ अंक:** 2

**सिंह** भाग्य का साथ मिलेगा। रुके हुए कार्य पूरे हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। व्यापार में लाभ के संकेत हैं।
**शुभ रंग:** सुनहरा 7 **शुभ अंक:** 1

**कन्या** अनावश्यक विवादों से बचें। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। नौकरी और व्यवसाय में स्थिरता बनी रहेगी।
**शुभ रंग:** हरा 7 **शुभ अंक:** 7

**तुला** दांपत्य जीवन में मधुरता रहेगी। साझेदारी के कार्यों में सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।
**शुभ रंग:** गुलाबी 7 **शुभ अंक:** 6

**वृश्चिक** कामकाज में व्यस्तता बढ़ेगी। विरोधियों पर विजय प्राप्त होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। आय के नए स्रोत बन सकते हैं।
**शुभ रंग:** मरून 7 **शुभ अंक:** 9

**धनु** विद्यार्थियों और प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वालों के लिए दिन अच्छा है। प्रेम संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।
**शुभ रंग:** पीला 7 **शुभ अंक:** 3

**मकर** घर-परिवार से जुड़ी खुशखबरी मिल सकती है। संपत्ति संबंधी मामलों में सफलता मिलने के योग हैं।
**शुभ रंग:** नीला 7 **शुभ अंक:** 8

**कुंभ** संचार और संपर्क से लाभ मिलेगा। छोटी यात्राएं लाभदायक हो सकती हैं। भाई-बहनों का सहयोग मिलेगा।
**शुभ रंग:** आसमानी 7 **शुभ अंक:** 4

**मीन** आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। रुका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।
**शुभ रंग:** पीला 7 **शुभ अंक:** 3

# धरती का दर्द आँकड़ों में नहीं, महिलाओं की ज़िंदगी में दिखता है

**स्त्री और प्रकृति : मौन संघर्ष की दो जीवित आवाज़ें**

**स्त्री की दृष्टि से देखिए, पर्यावरण का असली संकट समझ आएगा**

जब धरती बीमार पड़ती है, उसकी पहली आह एक स्त्री सुनती है। उसे पर्यावरण संकट समझने के लिए वैज्ञानिक आँकड़ों की ज़रूरत नहीं, क्योंकि वह इसे रोज़ महसूस करती है–घटती हरियाली, बदलते मौसम, धुएँ भरी हवा और बढ़ती गर्मी में। एक बच्चे ने माँ से पूछा, 'माँ, अब गर्मी इतनी ज़्यादा क्यों लगती है?' माँ शब्दों में भले न समझा सकी, लेकिन वह बदलती प्रकृति का सच जानती थी। 05 जून को दुनिया विश्व पर्यावरण दिवस मनाती है, पर एक महिला के लिए पर्यावरण रोज़ का संघर्ष है। वह इसे महँगी रसोई, घटते पानी और बच्चों की बिगड़ती सेहत में जीती है। शायद इसलिए पर्यावरण संकट की सबसे गहरी चोट स्त्री पर दिखाई देती है, क्योंकि प्रकृति और स्त्री–दोनों जीवन देती हैं, सँभालती हैं और बचाने की कोशिश करती हैं। जिस प्रकृति ने सदियों से मानव जीवन को सँभाला, आज वही इंसानी लालच से घायल है। 'प्रकृति से प्रेरित। जलवायु के लिए। हमारे भविष्य के लिए।' – विश्व पर्यावरण दिवस 2026 का यह विषय आने वाले संकट की चेतावनी है। प्रकृति हमेशा संतुलन सिखाती रही है–पेड़, नदियाँ और धरती निस्वार्थ जीवन देती हैं। लेकिन विकास की अंधी दौड़ में इंसान ने प्रकृति को केवल संसाधन समझा। नतीजा सामने है–उजड़ते जंगल, प्रदूषित नदियाँ, ज़हरीली हवा और बढ़ती गर्मी। इसकी सबसे गहरी मार उन पर पड़ रही है, जिन्होंने यह संकट पैदा नहीं किया–खासतौर पर महिलाओं पर। तपती धूप में दूर से पानी लाती एक स्त्री केवल घर नहीं सँभालती, बल्कि बिगड़ते पर्यावरण का भार भी उठाती है।

गाँव की महिलाएँ भले ही 'पर्यावरण विशेषज्ञ' न कहलाएँ, लेकिन प्रकृति की भाषा सबसे गहराई से वही समझती हैं। मिट्टी की गंध से वह बारिश पहचान लेती है और पेड़ों की हालत देखकर मौसम का बदलता स्वभाव समझ जाती है। उसके लिए जंगल सिर्फ लकड़ी नहीं, जीवन का आधार हैं। रिपोर्टें कहती हैं कि जलवायु परिवर्तन की सबसे गहरी मार महिलाओं और बच्चों पर पड़ती है, लेकिन इसका सबसे सच्चा प्रमाण वे चेहरे हैं, जो सूखे कुओं और बंजर खेतों के बीच भी परिवार की उम्मीद बचाए रखते हैं। शहरों में भी महिलाएँ प्रदूषण, बढ़ती गर्मी, प्लास्टिक से घिरा जीवन और मानसिक तनाव से जूझ रही हैं। धुएँ भरी हवा में बच्चे को बाहर भेजती एक माँ का डर किसी आँकड़े से कहीं अधिक वास्तविक होता है।

इतिहास गवाह है कि जब-जब प्रकृति पर संकट आया, सबसे पहले महिलाओं ने ही उसके पक्ष में आवाज़ उठाई। चिपको आंदोलन इसका सबसे जीवंत उदाहरण है, जहाँ उत्तराखंड की ग्रामीण महिलाएँ पेड़ों से इस



तरह लिपट गई, मानो अपने बच्चों की रक्षा कर रही हों। उनके लिए जंगल केवल लकड़ी नहीं, बल्कि पानी, हवा और जीवन का आधार थे। इसी सोच को वंगारी मथाई ने लाखों पेड़ लगाकर नई शक्ति दी। आज भी भारत के कई गाँवों में महिलाएँ बीज संरक्षण, वर्षा जल संचयन और जैविक खेती के जरिए चुपचाप धरती को बचाने में जुटी हैं। विडंबना यह है कि जिन्हें समाज अक्सर 'कमज़ोर' कहता है, वही पर्यावरण की सबसे मज़बूत प्रहरी बनकर उभरती हैं।

आज संकट केवल प्रकृति के उजड़ने का नहीं, इंसानी संवेदनाओं के मरने का भी है। कभी बच्चे मिट्टी में खेलते थे, आज स्क्रीन पर प्रकृति खोजते हैं। जो आँगन कभी पेड़ों की छाँव से जीवित थे, अब सीमेंट में कैद हैं और जो बारिश कभी सुकून थी, वही अब डर बन चुकी है। आधुनिकता ने सुविधाएँ दीं, लेकिन मनुष्य को प्रकृति से दूर कर दिया। विडंबना यह है कि हम एयर कंडीशनर में बैठकर ग्लोबल वार्मिंग पर चिंता करते हैं, जबकि वही सुविधाएँ धरती का ताप बढ़ा रही हैं। इस सच को महिलाएँ सबसे गहराई से समझती हैं, क्योंकि उनका जीवन पानी, हवा और घर की ज़रूरतों से जुड़ा है। वे जानती हैं कि जिस दिन साँस और पानी भी बिकने लगेंगे, सबसे पहले गरीबों का जीवन संकट में पड़ेगा। इसलिए पर्यावरण संरक्षण केवल हरियाली का नहीं, मानव अस्तित्व और सामाजिक न्याय का प्रश्न भी है।

धरती को बचाने की लड़ाई बड़े भाषणों से नहीं, घर की छोटी आदतों से जीती जाएगी। और इसकी सबसे मजबूत शुरुआत एक स्त्री कर सकती है। एक माँ यदि बच्चे को पानी बचाना, भोजन की कद्र करना, पौधों से प्रेम करना और प्लास्टिक से दूरी रखना सिखा दे, तो वह केवल आदतें नहीं, आने वाली पीढ़ियों की सोच बदल देती है। यही 'प्रकृति से प्रेरित' जीवनशैली है, जिसकी ओर विश्व पर्यावरण दिवस 2026 दुनिया को लौटाना चाहता है। विकास केवल ऊँची इमारतों और चौड़ी सड़कों का नाम नहीं। सच्चा विकास वही है, जहाँ नदियाँ स्वच्छ हों, हवा साँस लेने लायक हो और बच्चे प्रकृति के बीच खुलकर साँस ले सकें। क्योंकि जो विकास प्रकृति को मिटाकर खड़ा होगा, वह अंततः मानवता को भी मिटा देगा।

आज मानवता एक गहरे विरोधाभास में खड़ी है। इंसान मंगल पर जीवन खोज रहा है, जबकि पृथ्वी पर जीवन बचाना कठिन होता जा रहा है। यह बताता है कि हमने प्रगति तो की, लेकिन संतुलन खो दिया। प्रकृति सिखाती है कि संतुलन टूटे, तो विनाश तय है। इस सच को स्त्रियाँ सबसे सहज समझती हैं, क्योंकि उनका जीवन रिश्तों, जिम्मेदारियों और संवेदनाओं का संतुलन सँभालते बीतता है। वे जानती हैं कि जीवन केवल संसाधनों से नहीं, सहअस्तित्व और संवेदनाओं से चलता है। इसलिए यदि दुनिया को भविष्य बचाना है, तो उसे पर्यावरण को महिलाओं की दृष्टि से देखना सीखना होगा। क्योंकि स्त्री प्रकृति को संसाधन नहीं, जीवन का साथी मानती है।

भविष्य की सबसे बड़ी विरासत धन या तकनीक नहीं, बल्कि बची हुई धरती होगी। 05 जून केवल पर्यावरण दिवस नहीं, मानवता के सामने खड़ा एक कठोर प्रश्न है–क्या हम सचमुच भविष्य बचा रहे हैं? यदि जवाब 'हाँ' चाहिए, तो हमें अपनी सोच, आदतें और विकास की दिशा बदलनी होगी। जिस दिन समाज स्त्री और प्रकृति–दोनों का सम्मान करना सीख जाएगा, उसी दिन सच्चा विकास संभव होगा। क्योंकि धरती और स्त्री में एक गहरी समानता है–दोनों निस्वार्थ जीवन देती हैं, दोनों सबसे अधिक सहती हैं, और जब दोनों घायल होती हैं, तब मानवता का भविष्य भी डगमगा उठता है। इसलिए इस विश्व पर्यावरण दिवस पर केवल संकल्प नहीं, बदलाव को जीवन का हिस्सा बनाना होगा।

**कृति आरके जैन**

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः**–उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2009/34814 मो0 नं0 –9511151254,E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

## संक्षिप्त खबरें

### मंत्री राकेश सचान ने जनपद भ्रमण के दौरान किया वृक्षारोपण

**रायबरेली:-** मंत्री खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा तथा वस्त्रोद्योग विभाग उ0प्र0/प्रभारी मंत्री जनपद राकेश सचान ने आज जनपद भ्रमण के दौरान निरीक्षण भवन परिसर में वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर उन्होंने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत पौधा रोपित कर पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन का संदेश दिया। मंत्री ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि वृक्ष हमारे जीवन का आधार हैं और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान न केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम है, बल्कि यह हमारी भावनात्मक जुड़ाव और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का भी प्रतीक है। उन्होंने सभी जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों एवं आमजन से अपील की कि वे अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें तथा लगाए गए पौधों का संरक्षण भी सुनिश्चित करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण मिल सके। इस अवसर पर उपस्थित जनप्रतिनिधियों द्वारा भी वृक्षारोपण किया गया और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की गई। मंत्री ने निर्देश दिए कि जनपद में वृहद स्तर पर वृक्षारोपण अभियान संचालित किया जाए तथा लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि यह अभियान जनभागीदारी के माध्यम से एक जन आंदोलन का रूप ले, यही सरकार की मंशा है। इस अवसर पर अध्यक्ष जिला पंचायत रंजना चौधरी, विधायक सदर अदिति सिंह, विधायक सलोन अशोक कुमार, जिलाध्यक्ष भाजपा बुद्धिलाल, जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका, पुलिस अधीक्षक रवि कुमार, डीएफओ प्रखर मिश्र, मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता सहित जनप्रतिनिधिगण, प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे।

### यूपी में तीन PCS अधिकारियों का तबादला, योगी सरकार ने किया फेरबदल

**लखनऊ।** 206 पीपीएस अधिकारियों के तबादले इससे पहले सरकार ने विभिन्न जिलों में तैनात 206 पीपीएस अफसरों के तबादले किए थे। तबादला सूची में उन अधिकारियों की संख्या सबसे ज्यादा है जो लंबे समय से एक ही जगह पर तैनात थे। मुख्यमंत्री सुरक्षा में तैनात डीएसपी जितेन्द्र कुमार द्वितीय को शाहजहांपुर स्थानांतरित किया गया है। वहीं लखनऊ में सहायक पुलिस आयुक्त के पद पर तैनात विकास कुमार जायसवाल को मुख्यमंत्री की सुरक्षा टीम में तैनात किया गया है। साथ ही गौतमबुद्ध नगर से लखीमपुर खीरी स्थानांतरित किए गए एसीपी अरविन्द कुमार-द्वितीय का तबादला निरस्त कर दिया गया है। कन्नौज की चर्चित डीएसपी प्रियंका बाजपेयी और लखनऊ में तैनात वीरेन्द्र विक्रम को कानपुर नगर का सहायक पुलिस आयुक्त तैनात किया गया है। गोरखपुर में तैनात डीएसपी उदय प्रताप सिंह-द्वितीय, महोबा में तैनात गौरव उपाध्याय, कानपुर नगर में तैनात रंजीत कुमार और गौतमबुद्ध नगर में तैनात महेश त्यागी को लखनऊ का सहायक पुलिस आयुक्त तैनात किया गया है। वहीं मथुरा में तैनात आशीष शर्मा को एटीएस में तैनात किया गया है। इसके अलावा प्रयागराज के सहायक पुलिस आयुक्त राजीव कुमार यादव को प्रयागराज एयरपोर्ट का मुख्य सुरक्षा अधिकारी तैनात किया गया है।

### सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा नाम सारिका देवी पत्नी श्री प्रवेंद्र कुमार उपाध्याय निवासिनी 269 /285 जोशी टोला बिरहाना लखनऊ, उत्तर प्रदेश की निवासिनी हूँ द्य कुछ डाक्यूमेंट्स में मेरा नाम सारिका त्रिपाठी लिखा हुआ है द्य अतः मेरा दोनों नाम क्रमशः सारिका देवी और सारिका त्रिपाठी दोनों नाम से जाना और पहचाना जाता है ये दोनों ही नाम मेरे ही है, और भविष्य में मुझे इन दोनों नामो से जाना और पहचाना जायेगा

# लखनऊ के 332 गांवों में कृषि जमीन के सर्किल रेट में बंपर बढ़ोतरी, 1 करोड़ प्रति हेक्टेयर पहुंची कीमत

**● लखनऊ के 332 ग्रामीण गांवों में कृषि भूमि के डीएम सर्किल रेट में 100-200% की वृद्धि हुई है।**



स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**लखनऊ।** राजधानी में जिनके पास कृषक जमीनें हैं उनके लिए खुशखबरी। जिला प्रशासन ने शहरी क्षेत्र को छोड़कर 332 गांवों में कृषि योग्य जमीनों के डीएम सर्किल रेट सौ से दो सौ प्रतिशत तक बढ़ोतरी कर दी है। नई दरों के बाद पूर्वांचल एक्सप्रेसवे, कानपुर रोड और बिजनौर रोड के आसपास गांवों में जमीन की दरें एक करोड़ रुपये से लेकर सवा करोड़ रुपये प्रति हेक्टेयर तक पहुंच गई हैं। जिला प्रशासन ने प्रचलित डीएम सर्किल रेट और बाजार दर के बीच अंतर को कम करने के लिए संशोधित दरों का प्रस्ताव दिया था।

**सर्किल रेट बढ़ाने के लिए 29 मई को पेश किया गया था प्रस्ताव**

संशोधित दरों के लागू होने के बाद जिन गांवों में डीएम सर्किल रेट प्रति हेक्टेयर बीस से चालीस लाख रुपये था वहां पर बढ़कर 50 लाख से एक करोड़ रुपये तक हो गया है। गुरुवार को आपत्तियों के निस्तारण के बाद संशोधित दरें लागू कर दी गईं। एक अगस्त 2025 को लखनऊ में एक दशक से अधिक अंतराल के बाद नया डीएम सर्किल रेट लागू किया गया था। जिसमें शहर से लेकर गांव तक कृषि, आवासीय और व्यवसायिक जमीनों के सर्किल रेट में बढ़ोतरी की थी। एक अगस्त को जो दरें लागू की गई थीं उनमें ही लखनऊ विकास प्राधिकरण के विस्तारित क्षेत्र और नगर निगम सीमा में आने वाले गांवों को छोड़कर शेष 332 गांवों में सर्किल रेट बढ़ाने के लिए 29 मई को प्रस्ताव पेश किया गया था। तीन जून तक आपत्तियों पर सुनवाई की गई जिसमें कुछ गांवों में दरों में और बढ़ोतरी की गई। एडीएम राजस्व राकेश कुमार सिंह के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार दर और डीएम सर्किल रेट के बीच काफी अंतर था एसडीएम और उपनिबंधकों के सर्वे में भी कृषि दरों में बाजार मूल्य एवं प्रचलित सर्किल दरों में भिन्नता पाई गई थी। इसी आधार पर दरों को बढ़ाने का फैसला किया गया।

## दिल्ली में अचानक मौसम बिगड़ा, चार विमान लखनऊ एयरपोर्ट पर डायवर्ट

**लखनऊ।** दिल्ली का मौसम गुरुवार को दिन में अचानक खराब हो गया। आंधी और तेज बारिश के कारण वहां पर जनजीवन प्रभावित हो गया। आंधी और बारिश के कारण हवाई यातायात पर भी काफी असर पड़ा और वहां जा रहे विमानों को लखनऊ डायवर्ट कर दिया। इन विमानों की लैंडिंग चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर एक के बाद एक हुई। चारों विमानों को लखनऊ एयरपोर्ट पर होल्ड किया गया । मौसम ठीक होने के बाद यह विमान दिल्ली रवाना हो गए। दिल्ली में खराब मौसम के कारण अकासा एयरलाइन का विमान गोवा-दिल्ली क्यूपी 1814 लखनऊ एयरपोर्ट पर 160 यात्रियों के साथ दोपहर 3:09 बजे उतरा। इस विमान के 17 यात्री लखनऊ में ही उतर गए। विमान शाम 6:37 बजे रवाना हो सका। इसी तरह 86 यात्रियों के साथ मुंबई से दिल्ली जा रहा एयर इंडिया का विमान एआइ 2419 दोपहर 3:18 बजे लखनऊ उतरा। विमान शाम 4:51 बजे रवाना हो सका। बैंकाक से दिल्ली जा रहा इंडिगो एयरलाइन का विमान 6ई-1064 दोपहर 4:01 बजे 215 यात्रियों के साथ लखनऊ एयरपोर्ट पर उतारा गया। यह विमान शाम 4:59 बजे रवाना हो सका। पूर्णिया से दिल्ली जा रहा विमान 6ई-6560 लखनऊ 176 यात्रियों के साथ दोपहर 3:53 बजे उतरा। लखनऊ से विमान 5:13 बजे उड़ान भर सका।

## जीएसटी विभाग और व्यापारियों के बीच सीधा संवाद, व्यापारियों की समस्याओं का हुआ समाधान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**लालगंज (रायबरेली)।** उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल लालगंज के तत्वावधान में बुधवार को एक होटल में जीएसटी विभाग द्वारा व्यापारी संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विभागीय अधिकारियों ने व्यापारियों को जीएसटी से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां दीं और उनकी समस्याएं सुनीं। असिस्टेंट कमिश्नर शिखा गुप्ता एवं विवेक कुमार ने व्यापारियों से विभाग में अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी दर्ज कराने की अपील की। उन्होंने बताया कि ऐसा करने से विभाग की ओर से जारी दिशा-निर्देश, पोर्टल संबंधी सूचनाएं और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी सीधे मैसेज व ई-मेल के माध्यम से प्राप्त होती रहेगी। नगर अध्यक्ष विवेक शर्मा ने कहा कि जीएसटी विभाग की ओर से पहली बार इस तरह का व्यापारी संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया है। यदि ऐसे कार्यक्रम प्रत्येक तीन माह में तहसील स्तर पर होते रहें तो व्यापारी अधिक जागरूक होंगे और विभाग से उनका सीधा संवाद स्थापित होगा। उन्होंने बताया कि व्यापार मंडल नियमित

स्वतंत्र प्रभात — जो लिखेगा, वही टिकेगा — ब्रेकिंग न्यूज़

रूप से ऐसे कार्यक्रम आयोजित कराने का प्रयास करेगा। जिला अध्यक्ष रोहित सोनी ने जीएसटी पंजीकरण के दौरान आने वाली समस्याओं को अधिकारियों के सामने रखा। उन्होंने कहा कि कई व्यापारियों की दुकानें किराये की होती हैं, जिससे आवश्यक दस्तावेज न होने पर उन्हें जीएसटी नंबर प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इस पर असिस्टेंट कमिश्नर विवेक कुमार ने बताया कि किरायानामा या अन्य वैध प्रमाण प्रस्तुत करने पर जीएसटी पंजीकरण की प्रक्रिया पूरी की जा सकती है। अधिकारियों ने व्यापारियों को 10 लाख रुपये के दुर्घटना बीमा योजना की भी जानकारी दी। कार्यक्रम में असिस्टेंट कमिश्नर अशोक श्रीवास्तव, अरविंद सिंह, अतिव मोहन, राजीव राय, रामनरेश सहित बड़ी संख्या में व्यापारी मौजूद रहे।

## बिना फायर एनओसी के चल रहे एक दर्जन होटल और रेस्टोरेंट

**● जांच में खुली सुरक्षा व्यवस्था की पोल**



स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**लालगंज (रायबरेली)।** दिल्ली में हाल ही में हुए भीषण अग्निकांड के बाद अग्निशमन विभाग ने लालगंज नगर में होटल और रेस्टोरेंट की सुरक्षा व्यवस्था की जांच शुरू कर दी है। बृहस्पतिवार को फायर विभाग की टीम ने नगर के कई होटल और रेस्टोरेंट का निरीक्षण किया। जांच के दौरान चौंकाने वाली स्थिति सामने आई। एक होटल को छोड़कर अधिकांश होटल और रेस्टोरेंट बिना फायर एनओसी के संचालित होते मिले। अग्निशमन विभाग की इस कार्रवाई से होटल संचालकों में हड़कंप मच गया। टीम ने प्रतिष्ठानों में लगे अग्निशमन यंत्रों और अन्य सुरक्षा उपकरणों की स्थिति का निरीक्षण किया। कई स्थानों पर सुरक्षा मानकों को लेकर कमियां भी मिलीं।अधिकारियों ने संचालकों को तत्काल आवश्यक व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के निर्देश दिए। फायर स्टेशन प्रभारी मुकेश गिरी ने बताया कि नगर क्षेत्र के होटल और रेस्टोरेंट में आग से बचाव संबंधी तैयारियों की जांच की गई। संचालकों को आग लगने की स्थिति में अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों की जानकारी भी दी गई। उन्हें बताया गया कि किसी भी आपात स्थिति में घबराने के बजाय तय प्रक्रिया का पालन करना जरूरी है।बताया कि निरीक्षण के दौरान अधिकांश प्रतिष्ठानों ने अग्निशमन विभाग से अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) प्राप्त नहीं किया है। जबकि भीड़भाड़ वाले व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लिए सुरक्षा मानकों का पालन करना जरुरी माना जाता है। विभाग ने ऐसे संचालकों को जल्द से जल्द आवश्यक औपचारिकताएं पूरी करने के निर्देश दिए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि होटल और रेस्टोरेंट में प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग आते हैं। ऐसे में आग जैसी दुर्घटना की स्थिति में पर्याप्त सुरक्षा इंतजाम होना बेहद जरूरी है। छोटी सी लापरवाही भी बड़े हादसे का कारण बन सकती है। फायर विभाग ने स्पष्ट किया है कि सुरक्षा मानकों की अनदेखी किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं की जाएगी। आने वाले दिनों में भी निरीक्षण अभियान जारी रहेगा। नियमों का पालन न करने वालों के खिलाफ आगे की कार्रवाई की जा सकती है।

## मौसी को परेशान करता था, समझाने पर नहीं माना तो मामा ने मार डाला; हत्यारोपी गिरफ्तार

**लखनऊ।** इटौंजा के अकबरपुर गांव में 22 वर्षीय युवक सचिन की हत्या रिश्ते में मामा बृजेंद्र प्रताप सिंह उर्फ ब्रजेश ने प्लास्टिक की स्ट्रैप से गला कसकर की थी। ब्रजेश का आरोप है कि सचिन उसकी बहन को परेशान करता था, इसलिए हत्या कर दी। बुधवार को पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इटौंजा के अकबरपुर निवासी बृजेंद्र मड़ियांव के इंद्रपुरी कालोनी निवासी सचिन का रिश्ते में मामा लगता था। सोमवार को बृजेंद्र सचिन के घर गया और उसे अपने गांव ले आया था। मंगलवार की सुबह सचिन का शव अकबरपुर गांव में खेत में पड़ा मिला था। पिता रामशंकर ने बृजेंद्र पर हत्या का आरोप लगाते हुए इटौंजा थाने में मुकदमा दर्ज कराया था। बुधवार को पुलिस ने आरोपित को महोना नहर पुलिया के पास गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में बृजेंद्र ने बताया कि रिश्तेदारी के चलते सचिन का घर तक आना-जाना था। सचिन उसकी बहन पर गलत नजर रखता था। कई बार समझाने के बाद भी नहीं माना तो सोमवार को बहाने से उसे घर ले आया था। घर में शराब पिलाई फिर नशे की हालत में गला कसकर हत्या कर दी। शव केले के खेत में फेंक दिया था। थाना प्रभारी सोबरन सिंह ने बताया कि आरोपित को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

## केजीएमयू में बच्चे का सफल कोलेडोकल सिस्ट ऑपरेशन

**● लेप्रोस्कोपिक सर्जरी से मिली नई जिंदगी**



स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**लखनऊ।** राजधानी लखनऊ में पेडियाट्रिक सर्जरी विभाग की टीम ने दुर्लभ बीमारी का सफल उपचार किया। ऑपरेशन के बाद बच्चा स्वस्थ होकर डिस्चार्ज किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) के पेडियाट्रिक सर्जरी विभाग में लेप्रोस्कोपिक तकनीक से कोलेडोकल सिस्ट का सफल ऑपरेशन कर एक 11 वर्षीय बच्चे को नई जिंदगी दी गई। मरीज गौरव, निवासी पलीलालपुर, कानपुर, लंबे समय से पेट दर्द और पीलिया जैसी समस्याओं से जूझ रहा था। मरीज को 5 मई 2026 को केजीएमयू के पेडियाट्रिक सर्जरी विभाग में भर्ती कराया गया, जहां जांच में कोलेडोकल सिस्ट नामक दुर्लभ बीमारी की पुष्टि हुई। यह बीमारी पित्त नलिकाओं (बाइल डक्ट्स) में असामान्य विस्तार के कारण होती है, जिससे पीलिया और संक्रमण जैसी गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. जेडी रावत के नेतृत्व में विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने 26 मई 2026 को लेप्रोस्कोपिक सर्जरी के माध्यम से सफल ऑपरेशन किया। इस प्रक्रिया में क्षतिग्रस्त पित्त नलिका को हटाकर बाइल के प्रवाह के लिए नया मार्ग बनाया गया। डॉक्टरों के अनुसार, पारंपरिक ओपन सर्जरी की तुलना में लेप्रोस्कोपिक तकनीक से दर्द कम होता है, रक्तस्राव कम होता है और मरीज तेजी से स्वस्थ होता है। ऑपरेशन के बाद बच्चे की स्थिति लगातार बेहतर रही और 4 जून 2026 को उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। इस सफल सर्जरी में डॉ. सुमित सिंह, डॉ. धृति पटेल, डॉ. दक्षा गुप्ता, डॉ. अनुजा सिंह, एनेस्थीसिया विभाग की डॉ. आयुषी गुप्ता सहित नर्सिंग एवं रेजिडेंट डॉक्टरों की टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रो. जेडी रावत ने बताया कि केजीएमयू का पेडियाट्रिक सर्जरी विभाग अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है और बच्चों की जटिल बीमारियों के उपचार में लगातार उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। उन्होंने पूरी टीम को इस सफलता के लिए बधाई दी। केजीएमयू के पेडियाट्रिक सर्जरी विभाग ने एक बार फिर चिकित्सा क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल की है। डॉक्टरों की टीम ने 11 वर्षीय बच्चे के दुर्लभ कोलेडोकल सिस्ट का लेप्रोस्कोपिक तकनीक से सफल ऑपरेशन कर उसे नया जीवन दिया है। कानपुर निवासी 11 वर्षीय गौरव लंबे समय से पेट दर्द और पीलिया की समस्या से परेशान था। जांच में कोलेडोकल सिस्ट नामक दुर्लभ बीमारी सामने आई। केजीएमयू के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने आधुनिक लेप्रोस्कोपिक तकनीक से सफल सर्जरी कर मरीज को स्वस्थ किया। ऑपरेशन के बाद बच्चे को अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया है। चिकित्सकों का कहना है कि यह तकनीक मरीज को कम दर्द और शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है।

## एसएमएस लखनऊ ने स्पोकन ट्यूटोरियल, एडूपिरामिड्स एवं साइन, आईआईटी बॉम्बे के साथ किया समझौता ज्ञापन (MoU)

**● परिसर में स्थापित हुई स्पोकन ट्यूटोरियल स्किल एक्सेलरेटर लैब**

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**लखनऊ।** राजधानी लखनऊ में जून 2026 तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस), लखनऊ ने स्पोकन ट्यूटोरियल, एडूपिरामिड्स एवं साइन (SINE), आईआईटी बॉम्बे के साथ एक प्रतिष्ठित समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सहयोग का उद्देश्य छात्रों एवं शिक्षकों के तकनीकी कौशल का विकास करना तथा उन्हें उद्योगोन्मुखी एवं रोजगारपरक शिक्षा से जोड़ना है। समझौता ज्ञापन पर एसएमएस लखनऊ की ओर से निदेशक डॉ. आशीष भटनागर तथा स्पोकन ट्यूटोरियल, एडूपिरामिड्स एवं साइन, आईआईटी बॉम्बे की ओर से रेनू सिंह, प्रशिक्षण प्रबंधक ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर एसएमएस परिसर में स्थापित स्पोकन ट्यूटोरियल स्किल एक्सेलरेटर लैब का उद्घाटन रेनू सिंह द्वारा किया गया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धी युग में तकनीकी दक्षता और रोजगारपरक कौशल सफलता की कुंजी हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को ओपन-सोर्स प्रौद्योगिकियों के माध्यम से स्वयं को सशक्त बनाने और उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार होने का आह्वान किया। समझौते के अंतर्गत स्पोकन ट्यूटोरियल द्वारा 125 से अधिक ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर पाठ्यक्रमों एवं शिक्षण मॉड्यूल्स तक पहुंच उपलब्ध कराई जाएगी। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से छात्र, शिक्षक एवं कर्मचारी संरचित प्रशिक्षण एवं प्रमाणन कार्यक्रमों में भाग लेकर व्यावहारिक तकनीकी कौशल अर्जित कर सकेंगे। सफल प्रतिभागियों को आईआईटी बॉम्बे द्वारा प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए जाएंगे, जिससे उनकी रोजगार क्षमता और अधिक सुदृढ़ होगी। समारोह के उपरांत अपने वक्तव्य में एसएमएस लखनऊ के सीईओ एवं सचिव शरद सिंह ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए संपूर्ण एसएमएस परिवार को बधाई देते हुए कहा कि संस्थान उद्योग एवं समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप कुशल, नवाचारी एवं सक्षम मानव संसाधन तैयार करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह सहयोग विद्यार्थियों के लिए नए अवसरों के द्वार खोलेगा। इस अवसर पर निदेशक डॉ. आशीष भटनागर ने कहा कि आईआईटी बॉम्बे जैसे प्रतिष्ठित संस्थान के सहयोग से स्थापित यह पहल तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि यह साझेदारी नवाचार आधारित शिक्षण, व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं डिजिटल दक्षता को





बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सभा को संबोधित करते हुए डॉ. भरत राज सिंह, निदेशक जनरल (तकनीकी) ने विशेष रूप से ग्रामीण एवं अर्धशहरी पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों के लिए स्पोकन ट्यूटोरियल कार्यक्रमों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह पहल विद्यार्थियों के संप्रेषण कौशल, तकनीकी दक्षता एवं आत्मविश्वास को विकसित करने के साथ-साथ उन्हें भविष्य की व्यावसायिक एवं तकनीकी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए तैयार करेगी। कार्यक्रम में डॉ. धर्मेन्द्र सिंह, एसोसिएट डायरेक्टर, डॉ. पी. के. सिंह, डीन-स्टूडेंट वेलफेयर, मुख्य महाप्रबंधक, विभिन्न विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों तथा बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का समापन डॉ. धर्मेन्द्र सिंह, एसोसिएट डायरेक्टर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन तथा राष्ट्रगान के साथ हुआ। यह सहयोग एसएमएस लखनऊ की गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास, नवाचार एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता का एक सशक्त उदाहरण है।

## उमस और धूप भी नहीं रोक सकी हौसला

**● टीजीटी परीक्षा में दिखा युवाओं का जोश**





स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**लालगंज (रायबरेली)।** उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग की ओर से आयोजित प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (टीजीटी) की लिखित परीक्षा बृहस्पतिवार को बैसवारा इंटर कॉलेज परीक्षा केंद्र पर आयोजित हुई। परीक्षा के दौरान सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह मुस्तैद रही। परीक्षा में शामिल होने के लिए प्रदेश के विभिन्न जिलों से बड़ी संख्या में अभ्यर्थी लालगंज पहुंचे। लंबे समय से इस भर्ती परीक्षा का इंतजार कर रहे युवाओं में खासा उत्साह दिखाई दिया। परीक्षा केंद्र के बाहर सुबह से ही अभ्यर्थियों की आवाजाही बनी रही। लखनऊ से परीक्षा देने आई दीप्ति ने बताया कि वह काफी समय से तैयारी कर रही थीं। पेपर उनकी उम्मीद के अनुसार रहा। वहीं बाराबंकी से आई आरुषि ने कहा कि प्रश्नपत्र ठीक रहा हालांकि वास्तविक मूल्यांकन का पता परिणाम आने के बाद ही चलेगा। बाराबंकी से आए अभिषेक ने बताया कि उन्होंने लंबे समय से तैयारी की थी। परीक्षा उनके लिए संतोषजनक रही। उधर, उमस भरी गर्मी और तेज धूप ने परीक्षा देने आए अभ्यर्थियों के साथ पहुंचे अभिभावकों की मुश्किलें बढ़ा दीं। कई अभिभावक छांव और ठंडे स्थान की तलाश में इधर उधर भटकते नजर आए। प्रथम पाली में टीजीटी की परीक्षा सम्पन्न हुई। इसके बाद दूसरी पाली में प्राविधिक कला विषय की परीक्षा आयोजित की गई। पूरे दिन परीक्षा केंद्र पर शांतिपूर्ण माहौल बना रहा।

## यूपी में पर्यावरण महाकुंभ, 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत लगेंगे 5 करोड़ पौधे

**लखनऊ।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर विश्व पर्यावरण दिवस पर शुक्रवार को 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत व्यापक स्तर पर पौधरोपण किया जाएगा। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कुकरैल वन क्षेत्र से इसका शुभारंभ करेंगे। उनके नेतृत्व में पूरे राज्य में एक दिन में 5 करोड़ पौधरोपण किए जाएंगे। इसके लिए सभी विभागों व मंडलों के लक्ष्य निर्धारित कर दिए गए हैं। पर्यावरण दिवस पर वन विभाग की तरफ से इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में मुख्य आयोजन होगा, जिसमें मुख्यमंत्री भी शामिल होंगे। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत कुकरैल वन क्षेत्र में वृहद पौधरोपण होगा।

सबसे पहले यहां मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पौधरोपण करेंगे। यहां 200 से अधिक पौधे लगाए जाएंगे। इस कार्यक्रम में वन मंत्री अरुण सक्सेना, प्रभारी मंत्री, प्रमुख सचिव, विभागाध्यक्ष समेत वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहेंगे।

## पंचायत चुनाव पर हाई कोर्ट का सख्त रुख, राज्य सरकार से मांगी ओबीसी आयोग की रिपोर्ट

**● इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ पीठ ने पंचायत चुनाव और प्रशासकों की नियुक्ति मामले में राज्य सरकार से ओबीसी आयोग की रिपोर्ट और राज्य निर्वाचन आयोग से संभावित चुनाव कार्यक्रम की जानकारी मांगी है।**

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**लखनऊ।** पंचायत चुनाव और वर्तमान ग्राम प्रधानों को प्रशासक नियुक्त किए जाने के मामले में इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने राज्य सरकार और राज्य निर्वाचन आयोग से महत्वपूर्ण जानकारी तलब की है। अदालत ने पंचायत चुनावों से संबंधित पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) आयोग की रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश राज्य सरकार को दिया है। साथ ही राज्य निर्वाचन आयोग से संभावित चुनाव कार्यक्रम के बारे में स्थिति स्पष्ट करने को कहा है। यह आदेश न्यायमूर्ति शेखर बी. सराफ और न्यायमूर्ति एके चौधरी की अवकाशकालीन पीठ ने स्थानीय अधिवक्ता ओम प्रकाश प्रजापति की ओर से दाखिल जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए पारित किया। मामले की अगली सुनवाई 10 जुलाई को होगी। याचिका में राज्य सरकार के 25 मई के उस आदेश को चुनौती दी गई है, जिसके तहत वर्तमान ग्राम प्रधानों को प्रशासक नियुक्त किया गया है। याचिकाकर्ता का कहना है कि उत्तर प्रदेश पंचायत राज अधिनियम की धारा-12 के



अनुसार ग्राम प्रधान का कार्यकाल शपथ ग्रहण की तिथि से केवल पांच वर्ष का होता है। इसके बावजूद समय पर पंचायत चुनाव न कराकर मौजूदा प्रधानों को ही प्रशासक नियुक्त कर दिया गया, जिससे उनका कार्यकाल अनिश्चितकाल तक बढ़ गया है। यह व्यवस्था कानून के विपरीत है। याचिकाकर्ता ने मांग की है कि यदि किसी कारण से समय पर पंचायत चुनाव नहीं कराए जा सकते, तो पूर्व व्यवस्था के अनुसार एडीओ पंचायत या किसी अन्य सरकारी अधिकारी को प्रशासक नियुक्त किया जाए। सुनवाई के दौरान हाई कोर्ट ने चुनाव तैयारियों और आरक्षण प्रक्रिया की स्थिति जानने के लिए ओबीसी आयोग की रिपोर्ट तलब की तथा निर्वाचन आयोग से संभावित चुनाव कार्यक्रम पर स्पष्ट जवाब मांगा है।

## पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर वादा फाउंडेशन द्वारा निकाली गई जागरूकता रैली

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**बिसवां सीतापुर-** पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर वादा फाउंडेशन ने बिसवां ब्लाक की ग्राम पंचायत मोजुद्दीनपुर में जागरूकता रैली निकाली। तत्पश्चात ग्राम प्रधान मोहम्मद नईम अंसारी की अध्यक्षता मे पर्यावरण चेतना चौपाल का आयोजन किया। संचालन वादा फाउंडेशन के संयोजक अंशुमान सिंह ने किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नागरिक अधिकार संगठन के संयोजक हरीशंकर गुप्ता ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण सरकारों एवं संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। उन्होंने कहा प्रत्येक परिवार अपने सदस्यों की संख्या के बराबर प्रतिवर्ष पौधारोपण करे और उन पौधों की देखभाल का संकल्प ले, तो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक बड़ा परिवर्तन संभव है। उन्होंने कहा कि देश में हरित क्षेत्र का अनुपात लगातार चुनौतीपूर्ण स्थिति में है, इसे जनसहभागिता से ही सुधारा जा सकता है। शिक्षक, समाजसेवी मोहम्मद आरिफ ने कहा कि ऑक्सीजन के सहारे मानव जीवन संभव है, उसका प्राकृतिक स्रोत पेड़-पौधे हैं। प्रदूषण और अंधाधुंध वृक्ष कटान के कारण वातावरण में प्राकृतिक संतुलन प्रभावित हो रहा है। कि प्रकृति हमें जो शुद्ध हवा और ऑक्सीजन निःशुल्क प्रदान करती है। वही वामा संस्था की ज्योति ने कहा कि पर्यावरण





संरक्षण के अभियान में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। महिलाएं अपने घर, मोहल्ले और गांव में लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल करे तो पर्यावरण संरक्षण का आंदोलन जन-आंदोलन बन सकता है। प्रमुख समाजसेवी फिरोज खान ने कहा कि सरकार द्वारा निःशुल्क पौधों का वितरण किया जाता है, जिसका लाभ उठाते हुए प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर, खेत, विद्यालय मे पौधारोपण करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन कर रहे वादा फाउंडेशन के संयोजक अंशुमान सिंह ने जल संरक्षण, वन संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज पूरा विश्व जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान और प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में जल संरक्षण, वृक्षारोपण और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को जन-आंदोलन बनाने की आवश्यकता है। अंत मे कार्यक्रम की अहध्यक्षता कर रहे ग्राम प्रधान मोहम्मद नईम ने उपस्थित सभी का आभार व्यक्त करते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयासों एवं गांव में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण अभियान चलाने और पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने का संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या उपस्थिति जन समुदाय ने पर्यावरण संरक्षण, जल बचाओ, वृक्ष लगाओ तथा स्वच्छ वातावरण बनाए रखने का सामूहिक संकल्प भी लिया गया। इस अवसर पर श्रीराम यादव,पुत्ती लाल, रामप्रसाद, शर्मावती, रूबी आदि प्रमुख रहे।

# संक्षिप्त खबरें

## नगर निगम के सुपरवाइजरी सर्कल-23 ने सबसे पहले सेंसस-2027 का काम पूरा किया

### जॉइंट कमिश्नर मनरीत राणा ने टीम को तारीफ़ पत्र देकर सम्मानित किया

**पटियाला–** सेंसस-2027 के चल रहे पहले फेज़ के तहत, नगर निगम पटियाला के सुपरवाइजरी सर्कल-23 ने अपना काम सबसे पहले सफलतापूर्वक पूरा करके एक मिसाल कायम की है। इस कामयाबी के लिए जॉइंट कमिश्नर मनरीत राणा ने सर्कल-23 की टीम और ऑफिसर इन इंचार्ज को तारीफ़ पत्र देकर सम्मानित किया। मनरीत राणा ने टीम के सदस्यों की कड़ी मेहनत, लगन और ज़िम्मेदारी भरे काम की तारीफ़ करते हुए कहा कि टीम ने तय समय से पहले काम पूरा करके दूसरी टीमों के लिए एक प्रेरणा देने वाली मिसाल कायम की है। उन्होंने दूसरे सुपरवाइजरी सर्कल और गिनती करने वालों से भी सर्कल-23 से प्रेरणा लेने की अपील की और कहा कि वे भी शनिवार तक अपने-अपने एरिया का काम पूरा करने के लिए पूरी लगन से काम करें, ताकि वे भी तारीफ़ पत्र पाने के हकदार बन सकें। मनरीत राणा ने कहा कि सेंसस-2027 देश का एक बहुत ज़रूरी और बड़ा एडमिनिस्ट्रेटिव काम है, जिसका डेटा भविष्य की डेवलपमेंट प्लान, पॉलिसी और सरकारी सर्विस की प्लानिंग में अहम रोल निभाएगा। उन्होंने कहा कि सेंसस के काम के दौरान डेटा की एक्यूरेसी, कम्प्लीटनेस और क्वालिटी पक्का करना बहुत ज़रूरी है। मनरीत राणा ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को सेंसस का काम समय पर और पूरी ज़िम्मेदारी से पूरा करने के लिए भी मोटिवेट किया।

## रणवीर सिंह बनेंगे ललित मोदी? एक्टर ने खुद 2 साल पहले जाहिर की थी बायोपिक में काम करने की इच्छा



**दिल्ली।** रणवीर सिंह इस समय इंडस्ट्री के सबसे बड़े सुपरस्टार्स में से एक हैं। भले ही एक्टर इस समय डॉन 3 की कंट्रोवर्सी में घिरे हुए हैं लेकिन रणवीर के फैंस उन्हें उनकी अगली फिल्म में देखने का इंतजार नहीं कर पा रहे। अब आईपीएल के पूर्व अध्यक्ष ललित मोदी ने एक चौंकाने वाला खुलासा किया है। ललित मोदी ने बताया कि दो साल पहले रणवीर सिंह सिंह उनसे मिलने आए थे क्योंकि वो उनकी बायोपिक में काम करना चाहते थे।

**स्क्रिप्टिंग पर चल रहा है काम**

एएनआई के साथ बातचीत में ललित मोदी ने कहा- 'एक बायोपिक पर काम चल रहा है। स्क्रिप्ट लिखी जा रही है। मैं पहले ही कई सारे इंटरव्यू दे चुका हूं। मेरे पास स्नेहा रजानी के अंडर में एक पूरी टीम है, जो पहले सोनी चलाती थीं लेकिन वे अभी कहानी लिख रहे हैं।'

**ललित मोदी से मिलने गए थे रणवीर**

जब ललित से आगे पूछा गया कि वो किसे चाहते हैं अपनी बायोपिक में देखना। इस पर ललित ने कहा- 'अगर उनकी इच्छा हो तो रणवीर सिंह इस प्रोजेक्ट में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। लेकिन इसके लिए उनके पास टाइम होना जरूरी है क्योंकि अब वो बड़े स्टार बन गए हैं। मैं रणवीर को नहीं जानता था लेकिन दीपिका पादुकोण को बहुत अच्छे से जानता हूं। मैं रणवीर से कभी नहीं मिली। एक दिन मुझे फोन आया कि रणवीर मुझसे मिलना चाहता है। वो दो साल पहले मुझसे मिलने लंदन आया था।'

## दिल्ली के एक और होटल में आग, सफदरजंग एन्क्लेव के पास बेसमेंट में भड़कीं लपटें

**दिल्ली।** दक्षिणी दिल्ली के मालवीय नगर स्थित एक होटल में बुधवार को आग लगने से 21 लोगों की मौत हो गई थी। इस हादसे के एक दिन बाद बृहस्पतिवार को राजधानी में एक और होटल में आग लगने की घटना सामने आई है। राजधानी दिल्ली में होटलों की अग्नि सुरक्षा को लेकर सवालों के बीच गुरुवार शाम सफदरजंग एन्क्लेव के पास हुमायूंपुर गांव स्थित एक होटल में आग लग गई। सूचना मिलते ही दमकल विभाग की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया गया। दिल्ली फायर सर्विसेज के अनुसार, शाम 7:06 बजे होटल के बेसमेंट में आग लगने की सूचना प्राप्त हुई थी। शुरुआती जानकारी के मुताबिक आग बेसमेंट में रखे फर्नीचर में लगी, जिसने देखते ही देखते वहां धुआं फैला दिया। सूचना मिलते ही पांच फायर टेंडर मौके पर भेजे गए। दमकलकर्मियों ने तेजी से कार्रवाई करते हुए आग को बेसमेंट तक ही सीमित रखा और उसे फैलने से रोक दिया। आग लगने की सूचना के बाद होटल में कुछ लोगों के फंसे होने की आशंका भी जताई गई थी। हालांकि राहत एवं बचाव अभियान के दौरान स्थिति पर नजर रखी गई और दमकल विभाग ने आग पर काबू पा लिया।

# कुत्तें के लिए दो देश आमने-सामने: ब्राजील की थी करेंसी पर छापने की तैयारी, मक्सिको ने कहा- हमारी सांस्कृतिक विरासत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**दिल्ली।** दो देशों के बीच विवाद आमतौर पर सीमा, व्यापार या राजनीति को लेकर होते हैं, लेकिन इन दिनों ब्राजील और मैक्सिको के बीच बहस की वजह एक आवारा कुत्ता बन गया है। भूरे रंग के देसी कुत्ते, जिन्हें ब्राजील में 'कारामेलो' कहा जाता है, अब दोनों देशों की सांस्कृतिक पहचान की लड़ाई के केंद्र में हैं।

**राजिल ने कहा हमारी पहचान**

ब्राजील में कारामेलो कुत्ते करोड़ों की संख्या में पाए जाते हैं और देश की संस्कृति और जनजीवन का अभिन्न हिस्सा माने जाते हैं। ये कुत्ते मीम्स, टी-शर्ट्स, वायरल गानों और झांकियों में जगह बना चुके हैं। पिछले साल नेटफ्लिक्स पर 'कारामेलो' नाम की फिल्म भी रिलीज हुई। हाल ही में ब्राजील की संसद में इन कुत्तों को करेंसी पर छापने का प्रस्ताव भी लाया गया था।

**मैक्सिको का दावा, ब्राजील में बवाल**

विवाद अप्रैल में शुरू हुआ जब मैक्सिको ने 'पेरो कारामेलो' को अपनी स्थानीय नस्ल घोषित कर इसे सांस्कृतिक प्रतीक का दर्जा दे दिया। इस घोषणा के बाद ब्राजील में सोशल मीडिया से लेकर अखबारों तक बवाल मच गया। लोग सवाल उठा रहे हैं कि दशकों से ब्राजील की पहचान माने जाने वाले कुत्ते पर मैक्सिको कैसे दावा कर सकता है। कारामेलो कोई शुद्ध नस्ल नहीं हैं। इनमें करीब 300 विदेशी प्रजातियों का मिश्रण है। पुर्तगाली उपनिवेशकों के समय से लेकर इटली, जर्मनी, स्पेन और जापान के प्रवासियों के कुत्तों के मेल से यह अनोखा समूह विकसित हुआ। मिश्रित नस्ल होने के कारण इनमें आनुवंशिक बीमारियों का खतरा भी कम होता है।

**लैटिन अमेरिका का साझी विरासत?**

मैक्सिको के पशु कल्याण कार्यकर्ता दावा करते हैं कि उनके यहां भी ऐसे ही कुत्ते बड़ी संख्या में हैं। उनका कहना है कि दोनों देशों का मौसम और इतिहास समान रहा है, इसलिए यह एक देश की नहीं बल्कि पूरे लैटिन अमेरिका की साझी विरासत है।

**समस्या कहीं बड़ी है**

बहस पहचान को लेकर है, लेकिन असली समस्या गंभीर है। ब्राजील में अभी भी 2 करोड़ से ज्यादा आवारा कुत्ते हैं, जिनमें 90 प्रतिशत से अधिक कारामेलो हैं। लोकप्रिय होने के बावजूद लोग गोद लेने के समय विदेशी नस्लों को प्राथमिकता देते हैं। दोनों देशों के पशु प्रेमी इस बात पर सहमत हैं कि कारामेलो को चाहे ब्राजील का माना जाए या मैक्सिको का, उन्हें सिर्फ 'आवारा' नहीं मानकर देखा जाना चाहिए।

## मेयर इंदरजीत कौर ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ़ मेयर्स की एग्जीक्यूटिव मीटिंग में हिस्सा लेने ऋषिकेश पहुंचीं



**लुधियाना–** राज्य के इंडस्ट्रियल हब-लुधियाना को रिप्रेज़ेंट करते हुए, मेयर प्रिंसिपल इंदरजीत कौर मंगलवार को ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ़ मेयर्स की एग्जीक्यूटिव मीटिंग में हिस्सा लेने ऋषिकेश (उत्तराखंड) पहुंचीं। बुधवार को होने वाली मीटिंग में देश के अलग-अलग हिस्सों से मेयर हिस्सा लेंगे। मेयर इंदरजीत कौर ने कहा कि इन मीटिंग में हिस्सा लेने से डेवलपमेंट के लिए नए आइडिया खोजने और आम जनता की सेवा करने में मदद मिलती है। शहरों के सामने आने वाली सुविधाओं को बेहतर बनाने और चुनौतियों को हल करने के लिए भी चर्चा की जाती है। मेयर इंदरजीत कौर ने ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ़ मेयर्स में ओवरऑल डेवलपमेंट को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों की तारीफ की।

## लेखक-पत्रकार मृदु पवन चुटिया को जोनाई प्रेस क्लब ने पत्रकार पुरस्कार से किया सम्मानित

**● विभिन्न संस्थानों ने किया स्वागत**

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**असम धेमाजी।** सीसीबरगांव की वरिष्ठ पत्रकार, लेखक, कवि और समाजसेवी मृदु पवन चुटिया को जोनाई प्रेस क्लब की ओर से पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 31 मई को जोनाई प्रेस क्लब की 12वीं साधारण अधिवेशन के समारोह में फूलों की गुलदस्ते, सेलें चादर, जापी, होराई मानपत्र, के साथ नगद राशि से प्राकृतिक किया गया। मृदुपवन चुटिया गत 26 सालों से सीसीबरगांव से पत्रकारिता से जुड़े हुए हैं इसके अलावा भी विभिन्न 27 से अधिक मैगजीन का सम्पादन किया है।श्री चुटिया जिला साहित्य सभा, असम वर्तजीवी संघ, कवि समाज, सिलापथार प्रेस क्लब के अध्यक्ष का पद अलंकृत कर चुके है। सीसीबरगांव चुनावी क्षेत्र को आरक्षण मुक्त मांग समिति, सीसीबरगांव उन्नयन समिति आदि अनगिनत संस्थाओं जुड़े हुए हैं। सीसीबरगांव के शिक्षाविद और समाजसेवी स्वर्गीय रजनीकांत चुटिया के इकलौते बेटे मृदु पवन चुटिया को इससे पहले ही माजुली पत्रकार संघ से दत्तदेव गोस्वामी मेमोरियल ग्रामीण पत्रकारिता पुरस्कार, गोलाघाट जिला पत्रकार संघ से अयोध्या प्रसाद गोस्वामी खोजी पत्रकारिता पुरस्कार और सीलापथार के एक स्वैच्छिक संगठन सारथी से पत्रकार बिनोद सिंह मेमोरियल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें संपादन के लिए राज्य स्तर पर कई पुरस्कार मिले हैं, जिसमें चुटिया छात्र संस्था द्वारा बीर बिरोचन चुटिया पुरस्कार भी शामिल है। जोनाई प्रेस क्लब द्वारा श्री चुटिया को दिए गए इस पुरस्कार के लिए सिलापथार , सीसीबरगांव, के कई बेसरकारी संस्थाओं ने जोनाई प्रेस कल्ब की सराहना की और श्री चुटिया को बधाई देते हुए दिखाई दी।

## श्रीभूमि जिले के पातियाला में भूमि सर्वेक्षण को लेकर विवाद, सर्कल कार्यालय में लिखित शिकायत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**श्रीभूमि–** श्रीभूमि जिले के रामकृष्णनगर सर्कल कार्यालय के अंतर्गत पातियाला ग्राम पंचायत के वार्ड संख्या 2 में भूमि सीमांकन (खूंटी सर्वेक्षण) को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया है। इस मामले में बहार उद्दीन सहित कुछ स्थानीय निवासियों ने रामकृष्णनगर सर्कल अधिकारी के समक्ष लिखित शिकायत दर्ज कराई है। शिकायतकर्ताओं का आरोप है कि वर्तमान में सरकारी पहल के तहत विभिन्न क्षेत्रों में भूमि सीमांकन का कार्य चल रहा है। नियमों के अनुसार सर्वेक्षण से पहले संबंधित भूमि मालिकों तथा आसपास के भू-स्वामियों को सूचित किया जाना आवश्यक है। लेकिन गत 3 जून की शाम लगभग 6 बजे सर्कल कार्यालय का एक कर्मचारी स्थानीय लोगों को बिना सूचना दिए क्षेत्र में पहुंचा और दाग संख्या 702, पट्टा संख्या 169 की भूमि का सर्वेक्षण कर चला गया। स्थानीय लोगों का कहना है कि आसपास की अन्य भूमि का सर्वेक्षण किए बिना केवल एक विशेष दाग की भूमि का सीमांकन किए जाने से संदेह उत्पन्न हुआ है। उनका दावा है कि उक्त भूमि को लेकर न्यायालय में मामला विचाराधीन है। ऐसी स्थिति में स्थानीय लोगों को बिना जानकारी दिए सर्वेक्षण किए जाने के पीछे किसी दुर्भावनापूर्ण उद्देश्य की आशंका जताई जा रही है। इस संबंध में शिकायतकर्ताओं ने जिले के रामकृष्णनगर सर्कल अधिकारी को लिखित आपत्ति सौंपते हुए मामले की जांच तथा आवश्यक कार्रवाई की मांग की है। साथ ही उन्होंने पत्रकारों के समक्ष भी अपनी शिकायत रखते हुए संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया और मामले के निष्पक्ष समाधान की अपील की।

## एसओएल के 9 यूजी कोर्स पर फंसा पेच, बीबीए-एमबीए के लिए नहीं करना होगा इंतजार

**दिल्ली।** डीयू के स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग (एसओएल) में दाखिले का इंतजार कर रहे छात्रों को इस बार कुछ और समय प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है। शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया जून के मध्य या जुलाई के पहले सप्ताह से शुरू होने की संभावना है। इसकी वजह डिस्टेंस एजुकेशन बोर्ड (डीईबी) से अभी तक आवश्यक मंजूरी न मिलना है। एसओएल की निदेशक प्रो. पायल मागो ने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से डीईबी को आवेदन भेजा जा चुका है। डिस्टेंस एजुकेशन बोर्ड से प्रत्येक पांच वर्ष में पाठ्यक्रमों के लिए नई मंजूरी लेना अनिवार्य होता है। इस बार एसओएल के नौ स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए मंजूरी ली जानी है। आवेदन प्रक्रिया पूरी होने के बाद मंजूरी मिलने में आमतौर पर 15 से 30 दिन का समय लगता है, इसलिए नियमित यूजी पाठ्यक्रमों में दाखिले कुछ देर से शुरू होंगे।हालांकि बीबीए, बीएमएस, बीए (ऑनर्स) इकोनामिक्स और एमबीए पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया पर इसका असर नहीं पड़ेगा। इन कार्यक्रमों के लिए एसओएल को अगले वर्ष तक डीईबी की मंजूरी पहले से प्राप्त है, इसलिए इन कोर्सों के दाखिले जल्द शुरू किए जाएंगे।

## खास ज़रूरतों वाले लोगों को 10 खास तौर पर बनी ई-मोबिलिटी गाड़ियां बांटीं

**● ये खास गाड़ियां न सिर्फ खास ज़रूरतों वाले लोगों को आने-जाने का मौका देंगी, बल्कि नौकरी के रास्ते भी खोलेंगी: ष्टष्ट हिमांशु जैन**

**प्रोजेक्ट उम्मीद ने उड़ान भरी: दिव्यांगों के लिए नौकरी और आने-जाने का अपना ज़रिया**

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**लुधियाना–** सबको साथ लेकर चलने वाले विकास की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए, लुधियाना के डिप्टी कमिश्नर हिमांशु जैन IAS ने बुधवार को प्रोजेक्ट उम्मीद के तहत लोकल बचत भवन में खास ज़रूरतों वाले लोगों की शिक्षा और उन्हें मज़बूत बनाने के लिए उन्नति मिशन के तहत खास तौर पर बनी 10 इलेक्ट्रिक मोबिलिटी गाड़ियां बांटीं, ताकि समाज के हर तबके को मज़बूत बनाने के प्रशासन के वादे को और मज़बूत किया जा सके। ये गाड़ियां न्यू मोशन से ली गई हैं, जो खास ज़रूरतों वाले लोगों के लिए मोबिलिटी सॉल्यूशन बनाने वाली कंपनी है। इन्हें खास तौर पर हर लाभार्थी के शारीरिक साइज़ और ज़रूरतों के हिसाब से कस्टमाइज़ किया गया है, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा आराम और इस्तेमाल में आसानी हो। इस पहल को वर्धमान टेक्सटाइल्स लिमिटेड ने फंड किया था, जिसके बड़े योगदान से यह डिस्ट्रीब्यूशन मुमकिन हुआ।

हर गाड़ी एक बार पूरी बैटरी चार्ज करने पर 25 kmph से ज़्यादा की स्पीड पकड़ सकती है, जिससे लाभार्थियों को उनकी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भरोसेमंद, इंडिपेंडेंट मोबिलिटी मिलती है। इस मौके पर बोलते हुए, डिप्टी कमिश्नर हिमांशु जैन ने ज़ोर दिया कि यह पहल मोबिलिटी से कहीं आगे है और यह आर्थिक आज़ादी का रास्ता है। ये गाड़ियां खास ज़रूरतों वाले लोगों को रोज़ी-रोटी और रोज़गार के मौके देंगी, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकेंगे और समाज में सक्रिय रूप से योगदान दे सकेंगे। वरधमान टेक्सटाइल्स लिमिटेड की गाड़ियों को फंड करने में उसकी शानदार कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) पहल के लिए तारीफ़ हुई, जो सामाजिक कल्याण के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप की भावना को दिखाती है। प्रोजेक्ट उम्मीद, लुधियाना जिले में स्पेशल ज़रूरतों वाले लोगों के लिए शिक्षा, एम्पावरमेंट और रोज़ी-रोटी बनाने में लगातार दखल देकर एक इनक्लूसिव इकोसिस्टम बनाने की दिशा में काम कर रहा है।

# टेस्ट क्रिकेट को लेकर कुलदीप यादव ने भरी हुंकार

**● अफगानिस्तान से लेकर न्यूजीलैंड-ऑस्ट्रेलिया को दे डाली बड़ी चेतावनी**

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**दिल्ली।** अफगानिस्तान के खिलाफ होने वाले एकमात्र टेस्ट मैच की तैयारियों को लेकर स्पिनर कुलदीप यादव ने खुलकर बात की है। उनका कहना है कि इस समय उनका पूरा ध्यान रेड बॉल क्रिकेट खेलने पर है। कुलदीप ने ये भी स्वीकार किया है कि आईपीएल खेलने के तुरंत बाद अब टेस्ट क्रिकेट खेलना आसान नहीं है लेकिन इसके लिए वे पूरी तैयारी कर रहे हैं। यादव ने इस बात को भी माना कि रवींद्र जडेजा और अक्षर पटेल की कमी खल सकती है। अफगानी टीम के खिलाफ टेस्ट मैच में भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) ने कुछ खिलाड़ियों को आराम दिया है। इसमें पटेल और जडेजा का नाम शामिल है, जो नियमित रूप से टेस्ट क्रिकेट खेल रहे हैं। कुलदीप ने टीम में शामिल किए गए मानव सुथार और हर्ष दुबे पर भी बात की। उन्होंने इन दोनों की जमकर तारीफ की।

**टेस्ट मैच की तैयारियों पर बोले कुलदीप**

अफगानिस्तान के खिलाफ टेस्ट मैच से पहले जियोस्टापर पर बात करते हुए कुलदीप ने कहा, 'अफगानिस्तान के खिलाफ टेस्ट मैच की तैयारियां अच्छी चल रही हैं। अब तक हमारे दो नेट सेशन हो चुके हैं। जड्डू भाई यहां हैं, वो टेस्ट के नियमित खिलाड़ी हैं। हमें अक्षर पटेल की भी कमी खलेगी। हालांकि, हमारी तैयारी अच्छी चल रही है। युवा खिलाड़ी हर्ष दुबे और मानव सुधार यहां पर मौजूद हैं।

वॉशिंगटन सुंदर भी नियमित रूप से टेस्ट क्रिकेट खेल रहे हैं। वो टीम के माहौल में अच्छी तरह से ढल चुके हैं। ' स्टार स्पिनर ने आगे कहा, एक अटैकिंग स्पिनर के तौर पर मैं रेगुलर विकेट लेना चाहता हूं। मेरी बस यही सोच है। मेरा पूरा ध्यान फिलहाल रेड बॉल क्रिकेट खेलने पर है। आगे कई जरूरी टेस्ट सीरीज आने वाली है। खासकर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की घर पर सीरीज होगी। ये सीरीज हमारे वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के इस चक्र में काफी अहम होने वाली है। हम श्रीलंका और न्यूजीलैंड में भी जाएंगे तो हमें कठिन चुनौतियों का सामना करना है। मेरा मानना है कि अगर आपके पास बेहतरीन स्पिन अटैक है, तो आप मैच का रुख बदल सकते हैं। '

**IPL से आकर रेड-बॉल क्रिकेट खेलना मुश्किल: कुलदीप**

यादव ने माना कि आईपीएल से आकर रेड-बॉल क्रिकेट खेलना आसान नहीं है। उन्होंने कहा, 'जब आप आईपीएल से रेड बॉल क्रिकेट में आते हैं, तो आपके लिए ये काफी मुश्किल होता है। किस्मत से मुझे समय मिल गया और मैंने कम से कम 10-15 दिन प्रैक्टिस और मेहनत की है। टेस्ट क्रिकेट में टी20 के मुकाबले बॉलिंग करना अलग होता है। '

## श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा में LPG वितरण में अनियमितता और होम डिलीवरी को लेकर स्थानीय लोगों ने उठाए सवाल

**● रसोई गैस वितरण व्यवस्था से भारी असंतोष, प्रशासन से जांच की मांग**

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता



**श्रीभूमि:** श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा क्षेत्र में रसोई गैस (LPG) वितरण व्यवस्था को लेकर व्यापक असंतोष और अनियमितताओं के आरोप सामने आए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि रामकृष्णनगर स्थित Gazi Gas Agency पहले प्रत्येक सोमवार को दुल्लभछड़ा अस्पताल रोड पर गैस सिलेंडरों का वितरण करती थी, लेकिन लगभग एक महीने से इस व्यवस्था में बदलाव कर दिया गया है। वर्तमान में गैस सिलेंडरों का वितरण दुल्लभछड़ा डाकघर के सामने किया जा रहा है। आरोप है कि उपभोक्ताओं को पहले से बुकिंग कराकर भुगतान करने के लिए मजबूर किया जा रहा है। वहीं, होम डिलीवरी के नाम पर अतिरिक्त शुल्क वसूला जा रहा है, लेकिन निर्धारित पते पर गैस सिलेंडर पहुंचाने के बजाय एक निश्चित स्थान पर ही वितरण किया जा रहा है। स्थानीय निवासियों ने सवाल उठाया है कि जब होम डिलीवरी के लिए अतिरिक्त शुल्क लिया जा रहा है, तो वास्तविक होम डिलीवरी सेवा क्यों नहीं दी जा रही है। इस मामले को लेकर क्षेत्रवासियों ने संबंधित प्रशासन से तत्काल जांच कर दोषियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की है।

## हत्या के प्रयास के मामले में चार आरोपी गिरफ्तार

**देवरिया।** जनपद की कोतवाली पुलिस ने हत्या के प्रयास के मामले में वांछित चल रहे चार अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर सोनूघाट के पास से सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर अग्रिम विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस अधीक्षक अभिजीत आर. शंकर के निर्देशन में अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। कोतवाली थाना पर दर्ज मुकदमा संख्या 362/2026 में धारा 191(2), 109(1), 115(2), 352 एवं 351(2) बीएनएस के तहत नामजद अभियुक्तों की तलाश की जा रही थी। गिरफ्तार अभियुक्तों में मोहन प्रजापति निवासी परसिया भंडारी, सोनू रंगवा निवासी चकसराय बदल दास सोनूघाट, चम्पा देवी निवासी परसिया भंडारी तथा सलेहरा देवी निवासी परसिया भंडारी शामिल हैं। पुलिस के अनुसार चारों अभियुक्तों को गुरुवार को मुखबिर की सूचना पर सोनूघाट क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार सभी आरोपियों के विरुद्ध अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है।

## 3 पंजाब बटालियन एन सी सी, लुधियाना द्वारा विश्व साइकिल दिवस के उपलक्ष्य में जागरूकता रैली का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

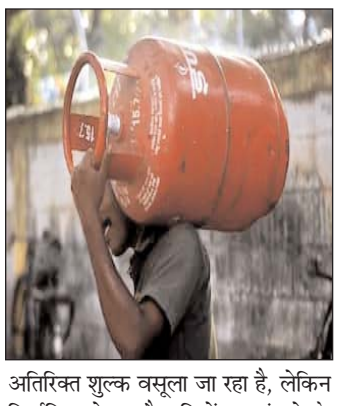




**लुधियाना–** 3 पंजाब बटालियन एनसीसी, लुधियाना द्वारा विश्व साइकिल दिवस के अवसर पर 03 जून 2026 को एक साइकिल रैली का आयोजन किया गया। इस रैली का उद्देश्य शारीरिक फिटनेस, पर्यावरण संरक्षण तथा सतत परिवहन को बढ़ावा देना था। रैली का आयोजन कर्नल अजय कोहली, कमांडिंग ऑफिसर, 3 पंजाब बटालियन एनसीसी, लुधियाना के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर कर्नल जे.पी. शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी तथा सूबेदार मेजर करनैल सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने कैडेटों को साइकिल को स्वस्थ, किफायती एवं पर्यावरण-अनुकूल परिवहन साधन के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया। लुधियाना के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के 150 से अधिक एनसीसी कैडेटों ने उत्साहपूर्वक रैली में भाग लिया। रैली बटालियन मुख्यालय से प्रारम्भ होकर शहर के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरी। इस दौरान कैडेटों ने पर्यावरण संरक्षण, कार्बन उत्सर्जन में कमी तथा नियमित शारीरिक गतिविधियों के स्वास्थ्य लाभों से संबंधित संदेशों वाली तख्तियां प्रदर्शित कीं। कैडेटों को संबोधित करते हुए कर्नल अजय कोहली ने शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने तथा पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में साइकिल चलाने की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने युवाओं से साइकिल को अपनी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाने तथा सतत जीवन शैली के प्रेरक बनने का आह्वान किया। कार्यक्रम का समापन कैडेटों द्वारा स्वस्थ जीवन शैली अपनाने तथा साइकिल सहित अन्य सतत उपायों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने की शपथ के साथ हुआ।

## दिल्ली में डीयू की असिस्टेंट प्रोफेसर की हत्या से सनसनी, फ्लैट में खून से सना शव मिला

**दिल्ली।** वसुंधरा एन्क्लेव स्थित सत्यम एन्क्लेव में रहने वाली डीयू की सहायक प्रोफेसर की हत्या कर दी। सिर पर भारी वस्तु से वार करके हत्या की गई है। मृतक की पहचान डा. देबोस्मिता पॉल के रूप में हुई है। मृतक अपने पति से अलग रहती थी। पति बेंगलुरु में रहता है। देबोस्मिता पॉल डीयू के शिवाजी कालेज में अंग्रेजी विभाग की सहायक प्रोफेसर थी। वर्ष 2017 में उनकी शादी हुई थी। घरेलू विवाद के बाद वर्ष 2022 में दंपती अलग हो गए थे। सहायक प्रोफेसर सत्यम एन्क्लेव में अपनी बहन के फ्लैट में रह रही थी। पुलिस ने बताया कि मृतक की बड़ी बहन वीरवार दोपहर ढाई बजे न्यू अशोक नगर थाने आई और कहा कि उनकी बहन फोन नहीं उठा रही। पुलिस सहायक प्रोफेसर की काल डिटेल्स निकालने में जुटी। इस बीच महिला ने कहा कि वह फ्लैट में जा रही है। सोसायटी के पदाधिकारियों के जरिये फ्लैट खुलवाने की कोशिश करेंगी। वह सोसायटी गईं। उन्होंने किसी तरह फ्लैट का दरवाजा खुलवाया। सहायक प्रोफेसर खून से लथपथ फर्श पर पड़ी थी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस को आशंका है इस मामले में मृतक के किसी परिचित का हाथ हो सकता है।

## पहली नौकरी का जश्न भी नहीं मना सकी झारखंड की श्रुतिका, दिल्ली के होटल की आग में राख हुई परिवार की खुशियां

**● झारखंड की श्रुतिका बर्नवाल की दिल्ली के हौज रानी स्थित एक अवैध होटल में आग लगने से मौत हो गई। मुंबई में पहली नौकरी की सैलरी मिलने के बाद परिवार उसकी खुशी मनाने मुंबई जाने की तैयारी में था।**

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

**दिल्ली।** मेरी बहन बहुत मेहनती थी और हमेशा से ही कुछ करना चाहती थी। पिछले महीने ही उसकी नौकरी लगी थी और दो जून को उसे पहली सैलरी मिली थी। उसने घर फोन करके हमें यह खुशी साझा की थी। उसकी नौकरी लगने की खुशी में पूरा परिवार पांच जून को उससे मिलने मुंबई जाने की तैयारी में था। फ्लाइट टिकट भी करा चुके थे। लेकिन भगवान ने हमसे सारी खुशियां ही छीन ली। यह बताते हुए श्रुतिका के बड़े भाई शुभम सिसक पड़ते हैं। हौजरानी के अवैध होटल में लगी आग में जान गंवाने वालों में झारखंड के बोकारो में रहने वाली श्रुतिका बर्नवाल भी शामिल हैं। श्रुतिका ने पिछले महीने ही मुंबई में रबर, केमिकल एंड पेट्रोकेमिकल स्किल डेवलपमेंट काउंसिल (आरसीपीएसडीसी) में नौकरी ज्वाइन की थी। यह एक एनजीओ है, जोकि कौशल विकास मंत्रालय और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के तहत कार्यरत है। काम के सिलसिले में ही श्रुतिका का दिल्ली आना हुआ था और एक से तीन जून तक होटल में कमरा बुक किया था। तीन जून की शाम को मुंबई लौटने की फ्लाइट बुक थी। लेकिन सुबह हुए हादसे में श्रुतिका ने जान गंवा दी।

**नौकरी लगने से थीं खुश, मुंबई में मनाने वाले खुशियां**

श्रुतिका टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टीआईएसएस) के स्कूल ऑफ हैबिटेट स्टडीज के वाटर पॉलिसी एंड गवर्नेंस प्रोग्राम (2024-2026) की छात्रा थीं और एक महीने पहले ही मुंबई में नौकरी ज्वाइन की थी। भाई शुभम बताते हैं कि श्रुतिका 30 जून को दिल्ली पहुंची थी 30 और 31 जून तक एक रिश्तेदार के यहां रुकी थीं। एक से तीन जून तक काम और मीटिंग की वजह से यहां कमरा बुक किया था। दो जून को ही श्रुतिका से बात हुई थी और पापा को फोन पर बताया था कि पहली सैलरी मिली है। वो बहुत खुश थी। हमने बहन की खुशी साझा करने के लिए पांच जून को उसके पास मुंबई जाने का प्लान बनाया था। लेकिन हमें क्या पता था बहन की ये ख्वाहिश पूरी ही नहीं हो पाएगी। श्रुतिका का पूरा परिवार जैनामोर, बोकारो, झारखंड रहता है। हादसे के बाद पिता रमेश प्रसाद बर्नवाल ने दिल्ली में अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को संदेश भेजकर मदद मांगी। श्रुतिका का अंतिम संस्कार बृहस्पतिवार को कर दिया गया है।